₹ २०

ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

भाद्रपद २०७५ सितम्बर २०१८

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ सत्र प्रारंभ

23 अगस्त

प्रातः 11:30 बजे

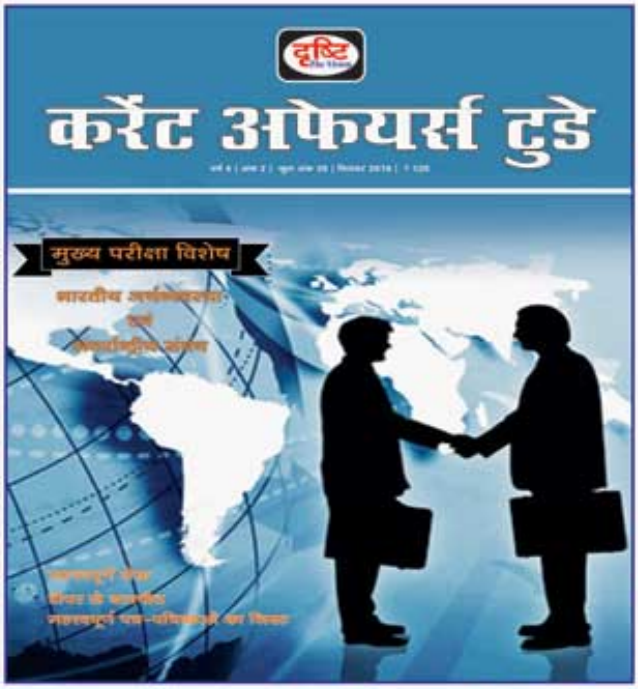

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं
अपनी लोकप्रिय वेबसाइट और यू-ट्यूब चैनल पर

www.drishtiIAS.com

Visit us: YouTube / DrishtiIAS & SUBSCRIBE

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें– (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011- 47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

भादपद २०७५ ▪ वर्ष ३९
सितम्बर २०१८ ▪ अंक ३

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

विगत दिनों एक प्रख्यात बाल मनोविज्ञान विशेषज्ञ से चर्चा हो रही थी। विषय था बच्चे विद्यालय में सीखते क्यों नहीं? अध्यापक पढ़ाते हैं, बच्चे पढ़ते हैं, पढ़े हुए को रटने का प्रयास करते हैं किन्तु परिणाम उतना अच्छा नहीं मिलता जितना मिलना चाहिए।

उन मनोचिकित्सक ने एक बड़ी मजेदार बात बताई। उन्होंने एक पुराना फिल्मी गीत बजाकर मुझसे कहा आप इस गीत को सुनिए। गीत सुना हुआ और मधुर था इसलिए मुझे बहुत आनंद आया। उन्होंने कहा– ''क्या आपको पूरे गीत के बोल याद हुए?'' मैंने कहा नहीं मैं तो आनंद में डुबा हुआ था। उन्होंने फिर गीत बजाया कहा– ''इस बार इसे शब्दशः याद कर लीजिए।''

अब मैंने पेन कागज लेकर उसको शब्दशः लिख लिया। थोड़े प्रयास से वे शब्द याद भी हो गए। उन्होंने पूछा– ''इस प्रक्रिया में आपको आनन्द आया क्या?'' मैंने कहा– ''आनन्द कैसे आता? मेरा पूरा ध्यान तो शब्दों को लिखने और उनको याद करने पर था।''

उन्होंने बड़ा अच्छा निष्कर्ष दिया। बोले– ''बच्चा आनन्द लेता है तो याद नहीं कर पाता और याद करता है तो आनन्द नहीं ले पाता। जिस दिन बच्चा पढ़ाई में इन दोनों का संतुलन करना सीख जाएगा उसे श्रेष्ठ अध्ययन और उत्तम परिणाम लाने से कोई नहीं रोक सकेगा।''

बच्चो! हम जब पढ़ाई करते हैं तो उसे न तो केवल आनन्द के लिए करें न केवल याद करने के लिए बल्कि थोड़ा ऐसे भी... थोड़ा वैसे भी...। अर्थात् मन की एकाग्रता और हृदय का आनंद दोनों ही साथ लाना होंगे तब आप देखेंगे कि पढाई न तो बोझ बनेगी, न खेल तमाशा।

अब जब भी पढ़ने बैठें तो यह सूत्र अवश्य याद रखना।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कविता

- पढ़ाई - सुरेश तन्मय ०६
- शिक्षक दिवस - डॉ. प्रभा पंत १०
- ढोलक - सरिता गुप्ता १४
- हिन्दी के दीपक जलें - रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक' २४
- कृष्ण - अश्वनी कुमार पाठक ३१
- हवा - डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' ३४
- शिक्षा पूरी करना - डॉ. वेदमित्र शुक्ल 'मयंक' ३५
- आओ हिन्दी दिवस... - डॉ. विजयकुमार शाही ४४
- फाग - आचार्य भगवत् दुबे ५०
- हम भारत के बच्चे - गोपालदास नीरज ५१
- जाड़े की हवा - डॉ. हरीश निगम ५१

कहानी

- ओजोन परत में छेद - नरेन्द्र देवांगन ०५
- दाढ़ी बाबा - सुशील 'सरित' ११
- अनोखा चोर - संजीव कुमार 'आलोक' २३
- मैं ही पूरी सेना - शशि गोयल २९
- जादू नहीं खेल - मनोहर चमोली 'मनु' ३२
- सीख श्रम की - अनिता जैन ३६
- चींटी और हाथी - मोनिका अग्रवाल ३८

चित्रकथा

- राम की कविता - देवांशु वत्स १५
- शनि और उसके चंद्रमा - संकेत गोस्वामी ४०
- गोलू को सबक - देवांशु वत्स ४८

प्रसंग

- मितभाषी आचार्य... - डॉ. सत्यकाम पहारिया १४

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की - १६
- कामरूप के संत साहित्यकार - डॉ. देवेनचन्द्र दास सुदामा २०
- संस्कृति प्रश्नमाला - २२
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ३५
- पुस्तक परिचय - ४६
- आपकी पाती - ४७

लघुकथा

- गोमी गाय -मीरा जैन ३७

बाल प्रस्तुति

- स्वच्छता एक सोच - वन्दना चौबे २५

जीवनी

- अहिल्याबाई -स्नेहलता २८

विविध

- पहेलियाँ - प्रभुदयाल श्रीवास्तव १८
- चुटकुले - ४७

आलेख

- बर्तनी की अशुद्धियां अनंतप्रसाद 'रामभरोसे' १३

लघुकहानी

- भूत ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' १९

एकांकी

- स्वास्थ्य परीक्षण डॉ. प्रीतिप्रवीण खरे ०८

अन्य ढेरों मनोरंजक सामग्री

(१६ सितम्बर : ओजोन दिवस)

ओजोन परत में छेद

कहानी : नरेन्द्र देवांगन

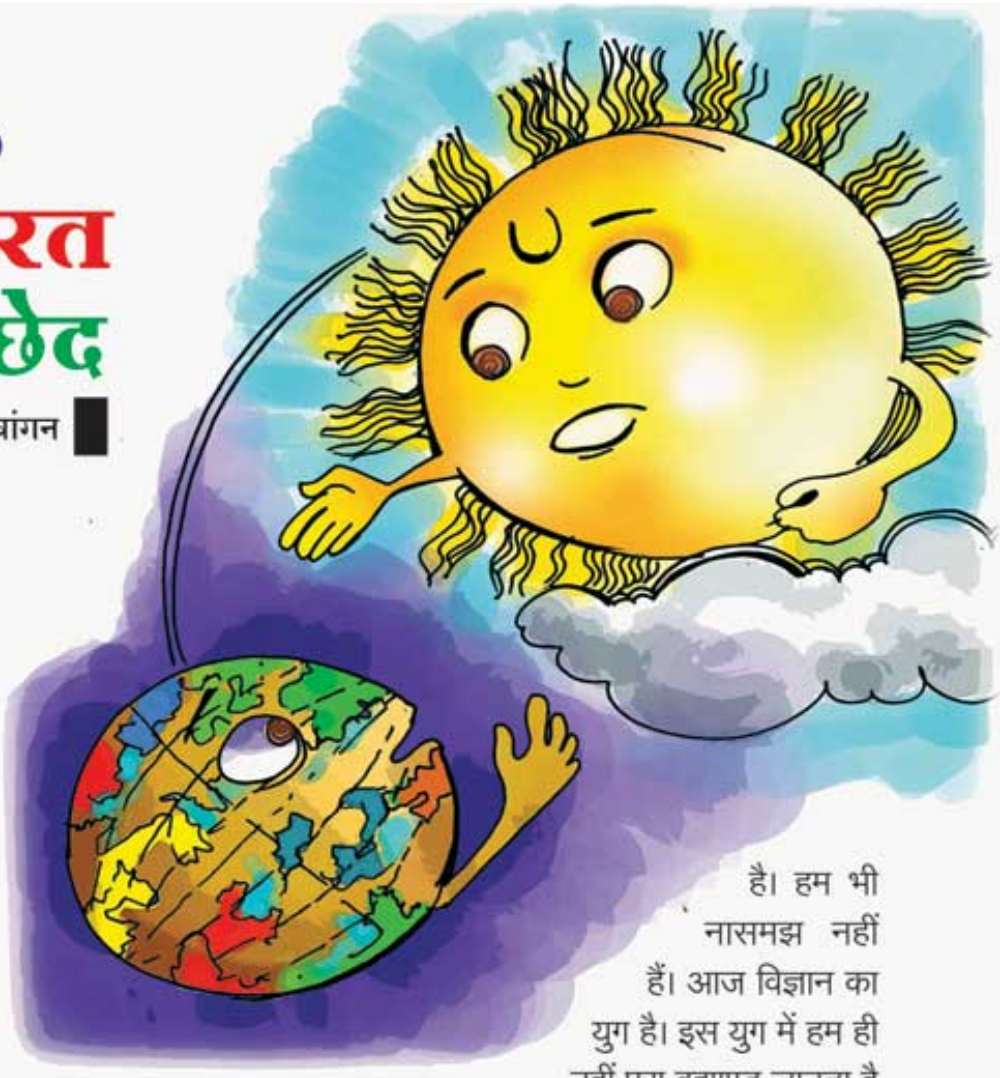

सुबह-सुबह पृथ्वी की चादर ओजोन ने देखा कि उसमें एक और नया छेद हो गया है। ओजोन अपने दामन में पहले से ही पड़ चुके काले धब्बों से वैसे ही परेशान थी, वह अब नया छेद देखकर वह आग बबूला हो उठी।

''उफ्, इस सूरज के बच्चे ने तो परेशान ही कर डाला है। मैं समझा-समझाकर थक गई, मानता ही नहीं।'' झल्लाई सी ओजोन गुस्से में बोली- ''मैं तो मजबूर हूँ। क्या कर सकती हूँ?''

तभी पृथ्वी भी जोर से चिल्लाने लगी, ''अरे, ओ सूरज, तू सुधरेगा भी या नहीं? तू तो हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ा है। देख तो सही मेरी चादर को, इसे काली करने का जिम्मेदार तू ही है। चादर को काली तो किया ही, ऊपर से इसमें इतने बड़े-बड़े छेद भी कर दिए हैं। मुझे कितनी तकलीफ होती है जानता है तू?''

सूरज भी पृथ्वी पर बरस पड़ा, ''तुझको बार-बार समझाता हूँ, पर तू नासमझ समझती ही नहीं है। तेरे दामन में हुए इन काले दागों के लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ। जब देखो तब जबरदस्ती मेरे ऊपर आरोप लगाती रहती है।''

''अरे, जा-जा अपने आपको समझदार समझता है। हम भी नासमझ नहीं हैं। आज विज्ञान का युग है। इस युग में हम ही नहीं पूरा ब्रह्माण्ड जानता है कि ओजोन परत पर छेद किसके कारण होता है। सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी पराबैंगनी किरणों के कारण।'' पृथ्वी गुस्से से तमतमाने लगी।

इसी के साथ एक बार फिर पृथ्वी और सूरज के बीच लड़ाई-झगड़ा शुरु हो गया। जब-जब पृथ्वी और सूरज के बीच इस तरह से बहस की नौबत आती, दोनों जमकर झगड़ते। आज भी दोनों तू-तू, मैं-मैं पर उतर आए थे। पृथ्वी का साथ ओजोन गैस की परत भी दे रही थी। लड़ाई बढ़ती गई।

सूरज गुस्से से लाल हो गया। बोला, ''तू ऐसे नहीं मानेगी। अभी तेरा ऐसा हाल करूँगा कि तू यहाँ से दुम दबाकर भागेगी। ठहर जा, अभी बताता हूँ तुझे।'' कहकर उसने अपनी पराबैंगनी किरणों की मिसाइल पृथ्वी पर दाग दी।

''अरे, यह क्या कर रहे हो तुम? मुझ पर फिर से पैराबैंगनी किरणें फेंक रहे हो। इसलिए तो मेरी ओजोन परत में छेद हो जाते हैं। आह, मेरा हाल–बेहाल हो गया। मैं जल गई। मैं मर जाऊँगी।'' पृथ्वी चीखी।

तब ओजोन परत ने सूरज से कहा, ''देखो, तुम्हारी पैराबैंगनी किरणों के कारण ही मेरे दामन में काले–काले दाग हो जाते हैं। जानते नहीं मेरी विशेषता। मैं मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी हूँ। मेरी ही परत पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों की रक्षा करती है। उन्हें अनेक प्रकार की बीमारियों से बचाती है।''

''बीमारियों से! अरे, इसमें मेरा क्या दोष है? वह देखो, वाह...वाह... क्या दृश्य है। उस औरत के चेहरे को देखो। तुम्हारे दामन जैसे दाग उसके चेहरे पर हैं। वह औरत जख्मों से भरी, त्वचा कैंसर अस्पताल में जा रही है। मेरी तो बरसों की मनोकामना पूरी हो गई। कब से मेरी ये पराबैंगनी किरणें तुम तक पहूँचने की कोशिश कर रही थीं। आखिर मैं कामयाब हो ही गया।'' सूरज ठहाका लगाते हुए बोला।

''मेरी तरह ही घायल हो गई है बेचारी। देख रहे हो उसकी त्वचा किस तरह झुलस गई है। तुमको क्या समझ आएगा उसका दर्द। उसका घर से बाहर निकलना ही बंद हो जाएगा। ओजोन चादर गहरी सांस छोड़ते हुए बोली।

पृथ्वी कराहते हुए बोली, ''देखो तो, तुम्हारी पैराबैंगनी किरणों की मिसाइल के कारण पेड़–पौधे कैसे सूख गए हैं। जरा इन छोटे–छोटे बच्चों को तो देखो, इनकी मासूम कोमल त्वचा कैसे जल गई। बड़े–बुजुर्गों पर न सही, इन बच्चों पर भी तुम्हें जरा भी दया नहीं आती?''

पृथ्वी के कहने पर सूरज ने बच्चों की तरफ एक नजर डाली। बच्चों की हालत देखकर सूरज की आँखों में भी आंसू आ गए। वह कुछ नरम होकर बोला, मैं मानता हूँ कि यह सब मेरी पराबैंगनी किरणों के कारण ही हुआ है। पर मैं क्या करूं। यह मानव का ही कसूर है। मानव

पढ़ाई

कविता : सुरेश तन्मय

सुबह पढ़ाई शाम पढ़ाई
ऊपर से ट्यूशन का बोझ
बिन समझाये हमें रटाए
शिक्षक जी शाला में रोज

बारहखड़ी अभी सीखे हैं
और किताबें दे दी ढेर
यह बचपन के साथ हमारे
होने लगा बहुत अंधेर
पूछ रहे हमसे सवाल की
अन्तरिक्ष की किसने खोज...
बिन समझाये

सारे विषय घोटकर पी लें
फिर तोते सा उन्हें सुनाएँ
अर्थ नहीं है पता किन्तु है
याद हमे सग्रह कविताएँ
नहीं हमे मालूम कौन था
गंगू कौन था राजा भोज...
बिन समझाये।

● जबलपुर (म.प्र.)

अपनी ही चिंता नहीं कर रहा है। देखो न, इसने ही पर्यावरण को दूषित करके वायुमंडल को खराब कर दिया है। मनुष्य अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। तो उसे मैं कैसे बचा सकता हूँ।''

फिर कुछ देर रुकने पर सूरज पृथ्वी से आगे बोला, ''ठीक है तुम्हारी चादर काली हो गई है। उसमें जगह-जगह छोटे-बड़े कई तरह के छेद हो गए हैं। एक काम करो, तुम अपनी चादर को सिल लो।''

''सिल लूँ।'' पृथ्वी आहत स्वर में बोली, ''सूरज भैया, यह मेरे लिए नामुमकिन है। ओजोन गैस प्राकृतिक रूप से बनती है। जब तुम्हारी किरणें वायुमंडल की ऊपरी सतह पर मौजूद ऑक्सीजन से टकराती हैं तो उच्च ऊर्जा विकिरण से इसका कुछ हिस्सा ओजोन में बदल जाता है। विद्युत क्रिया, विद्युत बादल और मोटरों से बिजली स्पार्क भी ऑक्सीजन को ओजोन में बदल देती है। पर दुःख की बात है कि मानव द्वारा लगाए गए उद्योगों के कारण मेरी इस चादर में बड़े-बड़े छेद हो गए हैं। मुख्यतः क्लोरो-फ्लोरा कार्बनों में मौजूदा क्लोरिन ओजोन की परत को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाती है।''

तब सूरज बोला, ''पृथ्वी बहन, तुम मानव को समझाती क्यों नहीं?''

''मैं क्या समझाऊँ सूरज भैया। पर्यावरण पर मानव बड़ी-बड़ी सभाएं करते रहते हैं। बात-बात पर पर्यावरण का झंडा उठाकर मार्च करते हैं। हर साल पृथ्वी दिवस, पर्यावरण दिवस मनाते हैं। इसके बाद भी दिन-ब-दिन पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है और मेरी ओजोन परत में छेद बढ़ते जा रहे हैं।'' पृथ्वी ने अपनी मजबूरी बताई।

''मनुष्यों के द्वारा पर्यावरण बचाने के लिए किए जाने वाले प्रयास मुझे तो सब दिखावा लगते हैं। वरना भारत, कनाड़ा, अफ़्रीका के ज्यादातर भाग समुद्र में जलमग्न होने पर उनकी आँखें जरूर खुल जातीं। इसलिए अब मनुष्य को दुर्गति से कोई नहीं बचा सकता। मनुष्य अपनी बरबादी का रास्ता खुद बना रहा है। ऐसे में मेरी पैराबैंगनी किरणों से उसका सर्वनाश होगा ही। मुझे माफ कर दो पृथ्वी बहन।'' सूरज उदास मुँह बनाते हुए बोला।

मजबूर ओजोन परत और पृथ्वी भी चुप रह गईं।

● खरोरा (छ.ग.)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

(उत्तर इसी अंक में)

स्वास्थ्य परीक्षण

एकाकी : डॉ. प्रीति प्रवीण खरे

पात्र परिचय
डॉ. विनोद, मोहिनी दीदी, चाँदनी, राधिका, संकल्प, प्रणय

(शाला के चिकित्सा कक्ष में सभी बच्चों का स्वास्थ परीक्षण चल रहा है। दौड़ते हुए चाँदनी, राधिका, संकल्प एवं प्रणय का प्रवेश। बाकी बच्चे धीरे धीरे चिकित्सा कक्ष से जाते हैं।)

मोहिनी दीदी – (बाद में आए बच्चों से कहती है) पंक्ति में बैठ जाओ।

राधिक – (सहमते हुए) सुई तो नहीं लगाओगी ना!

मोहिनी दीद– नहीं बाबा! मुँह खोलो, जीभ दिखाओ, अब कान दिखाओ और अब नाक देखने दो।

राधिका – अ अ आँ।

मोहिनी दीदी – (चाँदनी, प्रणय और संकल्प से) बच्चे लोग एक–एक करके आने का और वजन लेने का।

राधिक – दीदी मेरा परीक्षण हो गया, अब मैं जाऊँ?

राधिका – (डरते हुए पूछती है) कहीं सुई तो नहीं लगायेंगे ना! (बाकी बच्चे राधिका को डरते देख जोर से हँसते हैं।)

प्रणय – राधिका तुम तो बड़ी डरपोक हो। कक्षा में तो हमेशा निडरता की बातें करती हो, लेकिन... अब तुम्हारी असलियत सामने आ ही गई। (चिढ़ाता है) डरपोक–डरपोक–डरपोक।

राधिका – विद्यालय से बाहर मिलना तब पता चलेगा कौन डरपोक है।

डॉ. विनोद – (राधिका से) इधर आओ बेटा। आराम से बैठ जाओ। डरने की कोई बात नहीं है। अब अपना सीधा हाथ मेरी मेज पर सीधा रखो।

राधिका – डॉ. सा. मेरे हाथ एकदम ठीक हैं। देखिये दबाने से दुखता भी नहीं। मुझे कुछ नहीं हुआ।

डॉ. विनोद – मुझे मालूम है। मैं तो केवल आपका ब्लड प्रेशर (रक्तचाप) चेक करूँगा।

संकल्प – (डॉ. विनोद से) डॉ. सा. ये ब्लड प्रेशर क्या होता है?

डॉ. विनोद – बेटा ब्लडप्रेशर यानि रक्तचाप, रक्त का वह दबाव है जो रक्त वाहिनियों की दीवारों पर पड़ता है।

चाँदनी – (तपाक से) डॉक्टर सा. वो कैसे?

डॉ. विनोद – (प्रणय, राधिका, चाँदनी और संकल्प को एक साथ संबोधित करते हुए) बच्चों जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में रक्त का होना आवश्यक है, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति में रक्तचाप का रहना अनिवार्य है। इसके बिना हमारे शरीर में रक्त प्रवाह नहीं हो सकता।

संकल्प – डॉक्टर सा.! मुझे कुछ समझ नहीं आया।

डॉ. विनोद– बेटा! हमारे शरीर में रक्त का संचार उसके दबाव या चाप के बिना असम्भव नहीं है।

प्रणय – इसका मतलब रक्त हमारे शरीर के किसी एक अंग में स्थिर रहता है।

डॉ. विनोद – नहीं! रक्त हृदय की धमनियों द्वारा समस्त अंगों में संचरण करता रहता है।

राधिका – डॉक्टर सा! इसका कार्य क्या होता है?

डॉ. विनोद– यह अंगों को पोषण देता है, और हमारे अंगों का विकास करता है।

चाँदनी– रक्त को शरीर का कौन सा अंग प्रवाहित करता है, काका! मुझे ये भी जानना है कृपया बताइए।

डॉ. विनोद – इसे धमनियाँ अपने लचीलेपन द्वारा प्रवाहित करती रहती है।

प्रणय– डाक्टर साहब! दो दिन पहले मेरे दादाजी का ब्लडप्रेशर बढ़ गया था, ऐसा पिताजी ने माँ को बताया था। क्या वाकई ऐसा होता है?

डॉ. विनोद – हाँ, ऐसा हो जाता है।

प्रणय – लेकिन ऐसा क्यों होता है?

डॉ. विनोद – जब किसी व्यक्ति को अधिक चिंता, क्रोध परिश्रम तथा अन्य मानसिक परिवर्तन होते हैं, तब धमनी का लचीलापन कम हो जाता है। जिसके कारण रक्त प्रवाह में बाधा उत्पन्न होती है।

प्रणय – हूँ... और परिणाम स्वरूप रक्तचाप बढ़ जाता है।

डॉ. विनोद – हमेशा बढ़ता नहीं है। कभी–कभी घटता भी है।

संकल्प – (जो काफी देर से चुपचाप सबकी बातें सुन रहा था।) काका! किन–किन परिस्थितियों में रक्तचाप बढ़ता है और किन–किन परिस्थितियों में घटता है।

डॉ. विनोद – देखो बच्चों लोगों के शरीर में अलग–अलग समय में रक्त का संचरण भिन्न–भिन्न हो सकता है।

प्रणय– यह कभी भी हो सकता है?

विनोद – यह प्रतिदिन और प्रतिक्षण भिन्न–भिन्न हो सकता है। जब कोई व्यक्ति उत्तेजित होता है तो यह बढ़ जाता है और जब वही व्यक्ति विश्राम या निद्रा की स्थिति में होता है तब रक्तचाप घट जाता है। यह परिवर्तन आम बात है। प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में होता ही रहता है।

मोहिनी दीदी– बच्चो! मुख्यतः रक्तचाप हृदय की पम्प करने की शक्ति को दर्शाता है जो उच्च भी हो सकता है और निम्न भी।

चाँदनी – मोहिनी दीदी तो नहीं बता रही है। डाक्टर साहब! आप ही बता दीजिए।

डॉ. विनोद – बेटा! जब रक्तचाप अपनी सामान्य स्थिति से अधिक ऊँचा यानी कि १२० से बढ़ता है और लगातार बना रहता है वह स्थिति उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर) कहलाती है। जब ऐसा होता है तो उस व्यक्ति को हृदयघात और गुर्दे पर प्रभाव हो सकता है, अथवा दिल का दौरा भी पड़ सकता है। जब ८० से कम हो जाता है तो उस व्यक्ति का शरीर ठण्डा पड़ने लगता है, वह बेहोश हो भी हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि दोनों ही स्थितियाँ घातक हैं। सभी व्यक्तियों में सामान्य रक्तचाप रहना जरूरी है।

संकल्प– इसका मतलब न कम न ज्यादा। एकदम संतुलित, है ना डाक्टर साहब!

डॉ. विनोद – एकदम सही।

मोहिनी – दादा! अब आई बात समझ में। मैं तो चली जल्दी–जल्दी डाक्टर साहब से अपना ब्लडप्रेशर जाँच करवाने।

(राधिका संकल्प, चाँदनी और प्रणय अपना परीक्षण करवाते हैं। विद्यालय की छुट्टी की घंटी बजती है मोहिनी दीदी सभी बच्चों को विदा करती हैं।)

(पर्दा गिरता है)

● भोपाल (म.प्र.)

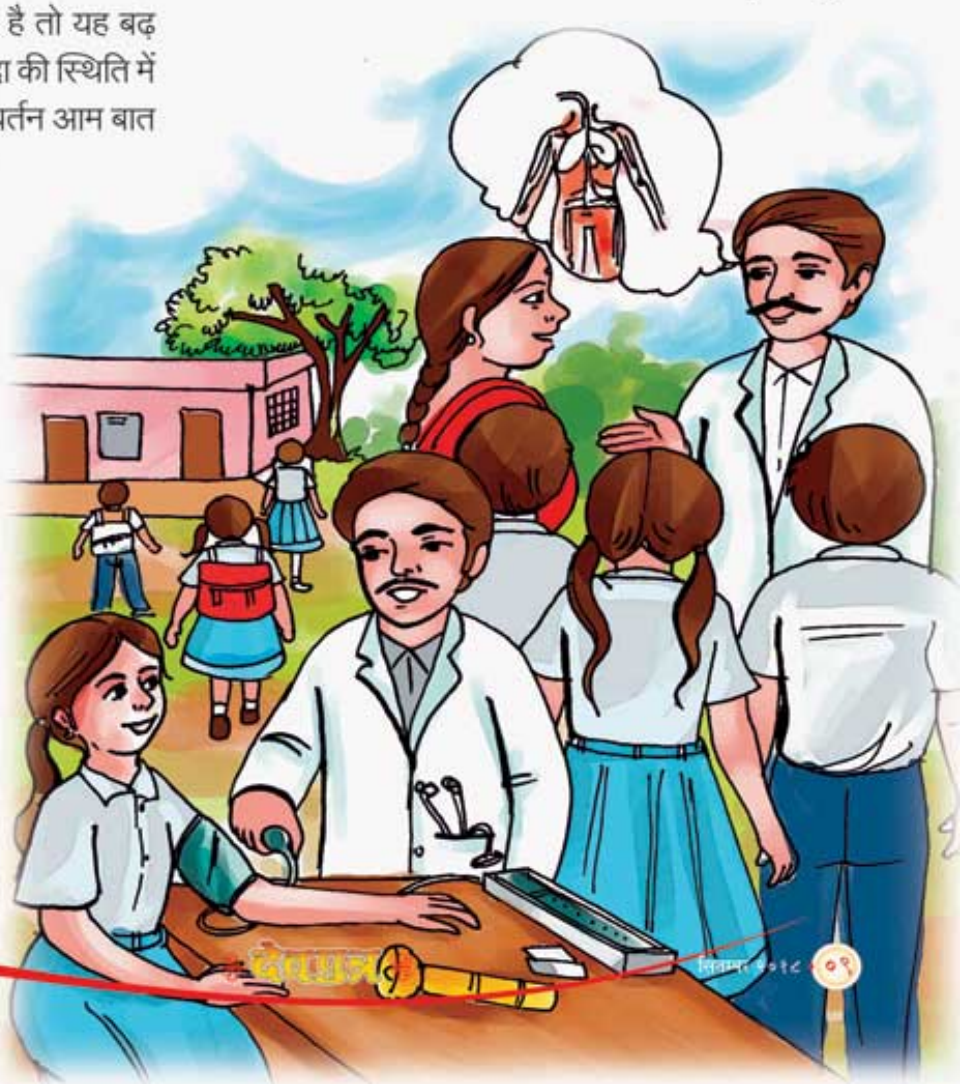

शिक्षक दिवस

कविता : डॉ. प्रभा पंत

शिक्षक दिवस क्या होता है?
पाँच सितम्बर के दिन ही क्यों
इसका आयोजन होता है?

जैसे सूर्य अपनी चमक से
अंधकार दूर भगाता है।
शिक्षक अपने व्यक्तित्व से
सबको राह दिखाता है।

उपदेशक कही नहीं होता वह
जीवन भी वैसा जीता है।
खुशियाँ देता औरों को अपनी
आँसू उनके खुद पीता है।

सर्वपल्ली राधाकृष्णन भी
ऐसे ही एक शिक्षक थे।
सादगीपूर्ण जीवन था उनका
कुशल निपुण निरीक्षक थे।

सन् उन्नीस सौ बासठ में
राष्ट्रपति पद गौरव पाया।
उनकी निष्ठा निष्पक्षता ने
प्रतिष्ठित पद उन्हें दिलाया।

ज्ञान देने की उत्कृष्ट कला,
अद्‌भुत प्रतिभा थी उनमें,
अज्ञान अंधकार मिटाने की
अमिट अभिलाषा थी उनमें।

जीवन की सच्ची शिक्षा देकर
शिक्षक होने का अर्थ समझाया।
जन्मदिवस उस शिक्षक का बच्चों
शिक्षक दिवस बनकर लहराया।

● हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

कहानी : सुशील सरित

दाढ़ी बाबा

श्याम आज घर में अकेला था। पिताजी तो सुबह ही हमेशा की तरह अपने कार्यालय चले गये थे, अचानक माँ को भी कहीं जाना पड़ गया। ''देखो श्याम! घर के अन्दर ही रहना और कोई भी आये तो दरवाजा मत खोलना, कहकर माँ तो चली गयी और श्याम घर में अकेले रह गया। पहले तो वह गेंद से खेलता रहा फिर उसने कैरमबोर्ड निकाला लेकिन कैरमबोर्ड अकेले तो खेला नहीं जा सकता क्यों ना पड़ोस वाली काकी की गौरी को बुला लिया जाये श्याम ने सोचा।

''गौरी–गौरी कैरमबोर्ड खेलोगी'', श्याम ने बाहर दरवाजे से ही गौरी को आवाज दी ''हाँ–हाँ'', कहते हुए गौरी तुरंत ही आ गयी। फिर श्याम और गौरी खूब देर तक कैरमबोर्ड खेलते रहे। तभी अचानक दरवाजे की घंटी बजी। ''अरे लगता है माँ आ गयी'', कहते हुए श्याम दरवाजे की तरफ भागा। श्याम दरवाज खोलने ही वाला था कि गौरी ने उसे रोक लिया। ''अरे खिड़की से झाँक कर देखा तो लो कि कौन आया है'', गौरी श्याम का हाथ खींचती हुई बोली। श्याम को गौरी की बात ठीक लगी। उसने खिड़की से झाँक कर देखा बाहर एक लम्बी दाढ़ी वाला आदमी खड़ा था। ''अरे ये तो कोई दाढ़ी बाबा है'', श्याम गौरी के कान में फुसफुसाया। ''दाढ़ी बाबा'' गौरी ने दोहराया।

''श्याम! माँ कहती हैं कि दाढ़ी बाबा बच्चों को पकड़ ले जाता है, कहीं वह वहीं तो नहीं। ''तो क्या करूँ?'' श्याम की समझ ने नहीं आया। तभी घंटी दोबारा बजी।

''कौन है?'' श्याम ने डरते–डरते पूछा। ''मैं हूँ, तुम्हारा दिल्ली वाला मामा, तुम्हारे लिये चाकलेट लाया हूँ जल्दी से दरवाजा खोलो'', बाहर से दाढ़ी बाबा बोला। ''श्याम के माँ पिताजी घर में नहीं हैं, आप बाद में आइएगा'', गौरी ने डरते–डरते कहा।

''अरे लेकिन मैं श्याम का मामा हूँ। ''नहीं तुम दाढ़ी बाबा हो हम दरवाजा नहीं खोलेंगे'' गौरी की आवाज जरा तेज हो गयी।

''ठीक है मत खोलो, मैं बाद में आऊंगा, कहकर वह दाढ़ी वाला आदमी दरवाजे से पीछे हटने लगा। ''अरे लो माँ भी आ गयी'' श्याम को तभी माँ आती दिखाई दीं।

दाढ़ी वाले बाबा ने श्याम की माँ को देखा तो वह जाते–जाते रुक गया और उसने दूर से ही माँ को नमस्ते की। माँ को देखकर श्याम को तसल्ली हुई और उसने दरवाजा खोल दिया। दाढ़ी बाबा माँ के साथ ही अन्दर आ गया श्याम और गौरी उसको माँ के साथ अन्दर आते

देखकर पीछे हट गए। ''अरे अरे डरो नहीं यह तो तुम्हारे दिल्ली वाले मामा हैं।'' माँ ने दाढ़ी बाबा को कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। ''मामा! लेकिन हम तो इन्हें, हाँ तुम लोग तो हमें दाढ़ी बाबा समझ रहे थे जो छोटे बच्चों को पकड़ ले जाता है, क्यों जीजी?'' श्याम भला क्या कहता। ''अच्छा छोड़ो वैसे यह अच्छी बात है कि माँ पिताजी जब घर में न हो तो किसी के लिये भी दरवाजा नहीं खोलना चाहिए फिर चाहे वह कुछ भी कहें'', कहकर मामा जी ने श्याम और गौरी के हाथ में दो चाकलेट रख दीं।

''लेकिन मामा जी आप ये अपनी दाढ़ी जरूर कटवा दें वरना हम आप को दाढ़ी बाबा ही कहते रहेंगे'' श्याम ने चाकलेट खाते हुए कहा।

''ठीक है मुझे भी अभी बाबा नहीं बनना है मैं कल ही दाढ़ी कटवा दूँगा'' कहकर मामा जी हँसने लगे।

● **आगरा (उ.प्र.)**

मितभाषी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रसंग : डॉ. सत्यकाम पहारिया

परमात्मा ने सुनने के लिए दो कान दिए है जबकि बोलने के लिए केवल एक मुँह है। दुगना सुनो और आधा बोलो, ऐसी व्यवस्था मानव को प्रकृति की ओर से प्रदान की गई है। आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल प्रकृति के इसी सिद्धान्त के अनुपालक थे। आचार्य शुक्ल की मितभाषिता बहुप्रसिद्ध थी। 'क्षिप्रं विजानाति चिरं श्रृणोति' को आचार्य जी चरितार्थ ही नहीं करते थे पूरी–पूरी तरह व्यवहार में लाते थे।

एक बार उनके दो शिष्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पास गए। उनमें से एक आचार्य जी के इस स्वभाव को बदलवाने की हिम्मत रखता था, उसका विश्वास था कि गुरु जी मेरी बात नहीं टालेंगे। दूसरे शिष्य की मान्यता थी कि कभी नहीं, आचार्य जी अपना स्वभाव नहीं बदलेंगे। शिष्यों ने शर्त लगाई दोनों आचार्य जी के पास पहुँचे। जिस शिष्य को विश्वास था कि मेरा निवेदन गुरु जी अवश्य मानेंगे। उसने पं. रामचन्द्र शुक्ल के पास पहुँचकर कुछ बेधड़क बनने का प्रयास करते हुए और बहुत कुछ शर्त को जीतने का आत्म–विश्वास लिए हुए कहा– ''आचार्य जी, मैंने एक शर्त लगाई कि मैं एक बार कम से कम पाँच शब्द आपसे कहलवा दूँगा।''

दूसरा साथी आचार्य जी की प्रतिक्रिया हेतु एकदम शान्त रहा।

आचार्य जी ने अपने स्वभावानुसार मितभाषिता को जीवित रखते हुए मात्र तीन शब्दों में उत्तर दिया– ''तुम हार गये।''

यथार्थ में दूसरा शिष्य हार गया। बड़े लोग अपने स्वभाव से दृढ़ निश्चयी और मितभाषी होते हैं, जिससे अनर्गल प्रलाप से कहीं गलत न कह जाएँ।

राष्ट्र, धर्म और भाषा पर गहन चिन्तन करने वाले आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी क्षेत्र के लिए अद्वितीय कार्य कर गए हैं। शायद मितभाषिता का उनका गुण चिन्तन की चेतना को सहयोग करता रहा। तभी हिन्दी–क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अत्यंत श्रद्धा और आदर के साथ याद किए जाते हैं। धन्य हैं हिन्दी साहित्य के मनीषी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

● **कानपुर (उ.प्र.)**

(१४ सितम्बरः हिन्दी दिवस)

वर्तनी की अशुद्धियाँ

आलेख : अनंत प्रसाद 'रामभरोसे'

विचारों की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से होती है। परन्तु शब्दों के गलत उच्चारण शब्दों के अर्थ बदल देते हैं। पिता–पीता, चिता–चीता, कलि–कली, नियत–नीयत जैसे बहुत सारे शब्द इसके उदाहरण हैं।

हिन्दी भाषा में वर्तनी की अधिकांश अशुद्धियों के पीछे शब्दों के गलत उच्चारण का हाथ होता है। यदि कोई व्यक्ति किसी शब्द का उच्चारण सही नहीं करता है तो पूरी संभावना है कि लिखने में उससे गलती होगी। हिन्दी में जैसे बोलते हैं वैसे ही लिखते हैं। सही शब्द बीमार या बीमारी का उच्चारण बिमार या बिमारी कर देने से शब्दों में वर्तनी दोष रह जाते हैं। इसी तरह तबीयत का गलत उच्चारण तबियत कर देने से भी यह गलती रह जाती है।

गलती को किसी भी स्तर पर किसी भी उम्र में सुधारा जा सकता है। हमारे एक मित्र विज्ञान के अध्यापक थे। अब अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। पहले साधारण से साधारण शब्द की वर्तनी में उनसे गलती हो जाया करती थी। बाद में उनका हिन्दी प्रेम ऐसा जगा कि अब उनसे ऐसी गलती नहीं के बराबर होती है। एक हमारे मित्र बहुत दिनों से श्रीमति को श्रीमती लिखते आ रहे हैं। वह यह मानने को तैयार नहीं कि श्रीमती सही है। शब्द कोश दिखाने पर वह लेकिन, पर करते रहते हैं।

किसी तरह की आदत चाहे वह सही हो या गलत, देर से छूटती है। इस कारण अच्छी आदतों को ही अपनाना श्रेयस्कर होता है। बाद में वे ही संस्कार बन जाती हैं। शिक्षा और संस्कार परस्पर पूरक हैं। इंटरनेट कम्प्यूटर युग ने बच्चों के लिखने की आदत छुड़ा दी है। यदा कदा लिखना हुआ तो शब्दों में वर्तनी की त्रुटि तो होगी ही, लिखावट भी इतनी खराब होती है कि उनका ठीक से पढ़ पाना मुश्किल होता है। समयाभाव के कारण बहुत लोग जल्दी–जल्दी घसीट कर लिखते हैं। अब बताइये, किसी को पत्र लिखते समय जल्दी में महोदय या महाशय को महाशन लिख जाय तो हो गया न काम चौपट। महोदय को बड़े पेट वाले और महाशय को अधिक खाने वाले के संबोधन से उन्हें कैसा लगेगा, यह तो वे ही जानें।

हिन्दी वर्णमाला में 'र' वर्ण एक से अधिक रूपों में प्रयोग होता है, यथा– ब्रजेन्द्र, बृजेन्द्र, कर्म, कर्तव्य, अनुग्रह, अनुगृहीत आदि। 'र' के इन प्रयोगों से प्रायः लोग परेशानी में पड़ जाते हैं। यही कारण है कि आशीर्वाद, दुर्व्यवहार, प्रकृति, कृति, कीर्ति जैसे शब्द प्रायः गलत लिख जाते हैं। ऐसे सभी शब्दों के बार–बार अभ्यास से वर्तनी में सुधार लाया जा सकता है।

हिन्दी में अनेक शब्द उपसर्ग तथा प्रत्यय की सहायता से बनाये जाते हैं। जैसे इत प्रत्यय जुड़कर अंकुर से अंकुरित, आनंद से आनंदित तथा ईय प्रत्यय जुड़ कर भारत से भारतीय, राष्ट्र से राष्ट्रीयता, लेखक से लेखकीय बनता है। परन्तु 'इक' प्रत्यय शब्द के अंत में लगने से यह शब्द के प्रथम स्वर को भी प्रभावित करता है। मूल– शब्द के प्रथम स्वर अ–आ में, इ ई–ऐ में उ ऊ– औ में बदल जाते हैं। यथा परिवार से पारिवारिक सप्ताह से साप्ताहिक संकेत से सांकेतिक तर्क से तार्किक, नीति से नैतिक, पुराण से पौराणिक, भूगोल से भौगोलिक शब्द बनते हैं।

वर्तनीगत अशुद्धियों के कई प्रकार और कारण हैं अपनी भाषा का शुद्ध प्रयोग हम सबका आवश्यक कर्त्तव्य है।

• सागर पाली (म.प्र.)

ढोलक

कविता : सरिता गुप्ता

भालू ढोल बजाता आया,
बंदर गाना गाता आया,
चिड़िया ने भी नाच दिखाया
फुदक फुदक कर,
फुदक फुदक कर,
फुदक फुदक कर।

पीहू बोली- भालू दादा
ढोलक मेरी दे जाओ
मैं भी नाचूँ गाऊंगी
फुदक फुदक कर,
फुदक फुदक कर,
फुदक फुदक कर।

फिर बच्चों की टोली आई,
एक ढोलक पर हुई लड़ाई
पीहू चढ़ गई सोफे पर,
फुदक फुदक कर,
फुदक फुदक कर,
फुदक फुदक कर।

नानी ने सबको समझाया,
बच्चों को इक गीत सुनाया,
सारे बच्चे मिलकर नाचे,
फुदक फुदक कर,
फुदक फुदक कर,
फुदक फुदक कर।

• दिल्ली

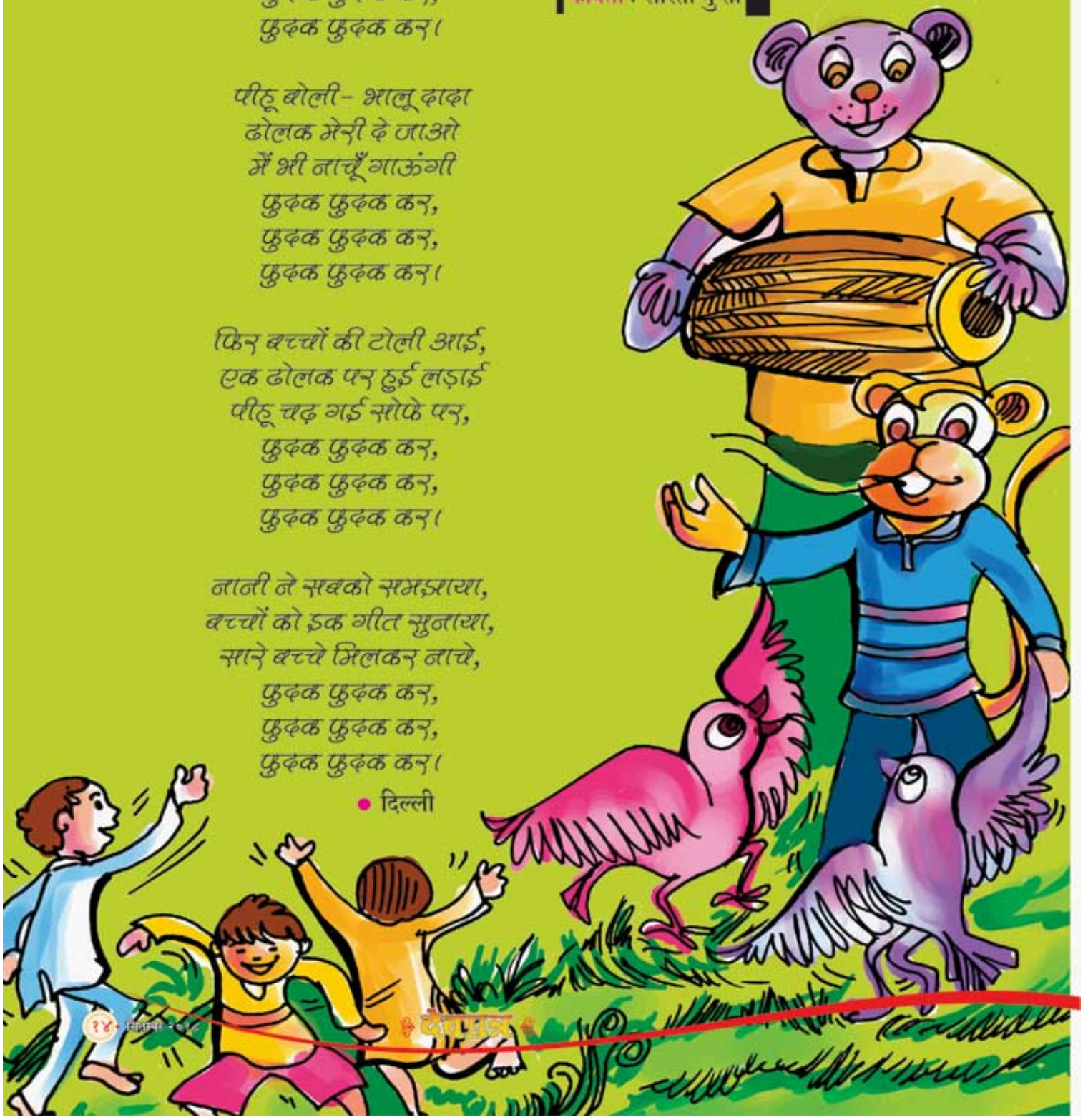

राम की कविता

चित्रकथा - देवांशु वत्स

गढ़ आया पर सिंह गया

''शिब्बा। यह कौन सा दुर्ग है?'' प्रातः काल ही माँ जीजाबाई ने एक किले की ओर इंगित करते हुए पूछा।

''कोंडाणा, माँ!'' शिवाजी का संक्षिप्त उत्तर था।

माँ जीजाबाई का चेहरा तमतमा उठा। मन खिन्न हो गया। एक अजीब सी टीस उनके हृदय में उठी फिर बोली– ''क्या म्लेच्छों का यह झण्डा मुझे इसी तरह प्रतिदिन प्रातःकाल देखना पड़ेगा?''

''नहीं माँ! अतिशीघ्र ही स्वराज्य के समस्त दुर्ग स्वाधीन करने की योजना है लेकिन आपकी इच्छानुसार अब यह कार्य कोंडाणा से ही शुरु होगा।''

शिवाजी का आश्वासन पा माँ आश्वस्त हो गई। वे भी तो यही चाहती थीं कि स्वराज्य में व्याप्त हो रहे आलस्य को समाप्त करके उद्यम शुरु हो।

शिवाजी दरबार में बैठे हैं। पास में ही मोरोपन्त पिंगले निल्लोपन्त मजूमदार अन्नाजी पंत सुरनीस के अतिरिक्त मावले वीर सेनानी भी यथास्थान उपस्थित हैं। चारों और सन्नाटे का साम्राज्य है। शिवाजी की बेचैनी स्पष्ट दिखाई दे रही है। वे नतमस्तक कुछ सोच रहे हैं। कुछ ही क्षणों में धीरे–धीरे सिर ऊपर उठाया। अपने आस–पास बैठे साथियों की ओर देखा, फिर बोले– ''माँ की इच्छा है कि कोंडाणा किले को म्लेच्छों की गुलामी से मुक्ति दी जाय। उसे जीतना है। इस दायित्व का निर्वाह आप लोगों में से कौन करेगा?''

''महाराज! यह शुभ कार्य मैं करूंगा'' – शिवाजी का वाक्य पूरा होते ही यह स्वीकारोक्ति सुनकर निगाहें एक साथ दरबार में दौड़ गयी देखा–तानाजी मालसुरे का ओजस्वी आनन दमक रहा था और वे महाराज शिवाजी की अनुमति की प्रतीक्षा में अत्यंत विनम्र भाव से झुके हुए थे।

शिवाजी कुछ कहने के लिए उत्सुक ही थे कि माता जीजाबाई बीच में ही बोल पड़ी– ''तानाजी! यह कैसे हो सकता है? क्या मैं यह नहीं जानती कि तुम्हारे पुत्र रायबा का विवाह समीप है। उसकी तैयारियां भी चल रही हैं। उसके लिए तुम अच्छे मुहूर्त की प्रतीक्षा कर रहे हो। शिब्बा तुम्हें लड़ाई में भेज दें यह तो अन्याय होगा।''

''माँ! न्याय अन्याय का प्रश्न वहाँ खड़ा होता है जहाँ बलात् कार्य किया अथवा कराया जाय। कर्तव्य पालन सदैव पुण्यपक्षीय ही होता है। मैंने यह दायित्व स्वयं स्वीकार किया है। अनेक वर्ष की अकर्मण्यता के कारण हमारी तलवारों को जंग लग गया है। अब हम मुगलों के खून से उनका जंग छुड़ायेंगे। ऐसे मौके बार बार नहीं आते माँ! रायबा

का विवाह बाद में भी हो सकता है। रही मुहुर्त की बात तो अब तो मुहूर्त कोंडाणा दुर्ग में ही निकाला जाएगा। रायबा की वरयात्रा वहीं सजेगी।''

फिर शिवाजी की ओर मुड़कर बोले ''महाराज! हमें अपना आदेश और आशीष दीजिए। कोंडाणा विजय का स्वप्न साकार करके ही मैं वापस आऊंगा। विलम्ब न करें, विजय हमारी प्रतीक्षा कर रही है।''

शिवाजी महाराज ने तानाजी को अपने बाहुओं में समेट लिया– ''जाओ तानाजी! स्वराज्य को सुदृढ़ करने हेतु महायज्ञ का शुभारम्भ करो। प्रजा बेचैनी के साथ अपने गुलाम किलों की आजादी की प्रतीक्षा कर रही है।''

****

पूना के पास ही चार मील दूरी पर उमराव गांव। तानाजी अपने घर बैठें हैं। युद्ध सम्बन्धी विचार विमर्श चल रहा है। अपने भाई सूर्याजी को सम्बोधित करके तानाजी कहते हैं– ''सूर्याजी ! तुम रोहित घाटी के देशमुख के पास जाओ और

उन्हें बता दो कि मुझे किसी भी समय ५०० रणबांकुरों की आवश्यकता पड़ सकती है।''

सूर्याजी उठे और अपने गन्तव्य की ओर जाने लगे। किन्तु यह क्या वे जाते जाते रुक जाते हैं। कहते हैं– ''भैया! लेकिन एक बात याद रखियेगा कि जब तक मैं लौट कर न आ जाऊं आप विजय अभियान पर नहीं जायेंगे। इस युद्ध में मैं भी आपके साथ चलूंगा।''

''अच्छा! अच्छा!! ठीक है जा और जल्दी लौट।'' तानाजी ने कहा।

सूर्याजी अपने काम पर चले गये तो तानाजी भी अपने कुछ साथियों के साथ कोंडाणा के आसपास की परिस्थिति का निरीक्षण करने के लिए निकल पड़े। यद्यपि पुरन्दर की संधि के पूर्व तक यह दुर्ग शिवाजी के ही अधिकार में था तथापि परिवर्तित परिस्थितियों का जायजा लेना बहुत ही जरूरी था। प्रकृति निर्मित यह दुर्ग सचमुच दुर्जेय और अभेद्य था। उसका दुर्गपति उदयभानु राठौर यद्यपि विलासी था किन्तु युद्ध कुशल एवं चतुर था। किले की दीवारों और बुर्जों पर तोपें इस तरह लगायी गई थीं कि शत्रु के लिए किले के नजदीक आ पाना भी कठिन था। दुर्ग का पश्चिमी पिछवाड़ा तो इतना भयानक था कि उस ओर जाने का साहस करना भी कठिन था। एकदम खड़ी दीवारें, जंगली जानवरों की बहुतायत, जहरीले सांपों का साम्राज्य। शायद यही कारण था कि उदयभानु ने इस दिशा की उपेक्षा कर रखी थी वह जानता था कि इस मौत की घाटी में कोई भी समझदार व्यक्ति फंसने की भूल नहीं करेगा।

४ फरवरी १९७२। रात्रि के अन्धकार ने अपनी आधी यात्रा पूर्ण कर ली थी। तानाजी के ५०० सैनिक काली कमली ओढ़े उस मौत की घाटी में खड़े हैं। सपाट और सीधी दीवार देखकर सभी दंग हैं। परन्तु तानाजी अत्यंत शान्त किन्तु सिद्ध दिखाई देते हैं। वे धीरे से बुदबुदाये– ''सूर्या जी!''

''हाँ भाई साहब!''

''यशवन्ती कहां है?''

सूर्याजी एक पिटारा लाकर तानाजी के सामने रख देते हैं।

पिटारा खुला। यशवन्ती बाहर आई। तानाजी उसे अपनी गोद में उठा लेते हैं। और पीठ पर हाथ फेरते हुए कहते हैं– ''यशवन्ती! स्वराज्य का सम्मान तेरे ऊपर ही निर्भर है। अब तू एक मामूली गोह नहीं रही। तेरे पौरुष पर ही हमारी जीत का आधार है। जा इस पहाड़ी

पर चढ़ जा और चोटी पर पहुंच कर अपने पंजे जमा दे कि हम सब किले के ऊपर पहुंच सकें।''

किन्तु यह क्या? यशवन्ती ऊपर जाने के बजाय वापस क्यों लौट आई? दो बार ऐसा हुआ। तानाजी उसे ऊपर जाने का संकेत करते हैं वह नीचे चली आती है। क्रोधित होकर तानाजी तलवार निकाल लेते हैं– ''जाती है ऊपर कि कर दूं तेरे टुकड़े–टुकड़े।''

यशवन्ती सहम गई नहीं मानते हो तो लो और यह सबके देखते ही देखते अपनी पीठ से एक रस्सा बांधे किले की सपाट दीवार पर सपाट दौड़ गयी और ऊपर जाकर चिपक गई। तानाजी रस्से को बार बार झटका देकर देखते हैं फिर उससे लटक जाते हैं। अब शायद उन्हें विश्वास हो गया है कि यशवन्ती अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ है। पहले वे स्वयं चढ़ते हैं। किले के ऊपर पहुच कर रस्सा यशंवती की पीठ से खोलकर एक मजबूत पेड़ से बांध देते हैं। फिर क्या? ऊपर चढने वालों का तांता लग जाता है। अनेक रस्से देखते ही देखते किले की दीवार से नीचे लटक जाते हैं और तानजी के वीर सिपाही उन्हीं रस्सों के सहारे ऊपर चढ़ जाते हैं।

(शेष कथा अगले अंक में।)

पहेलियाँ

मनोरंजन : प्रभुदयाल श्रीवास्तव

(१)
शुभ विवाह के अवसर पर,
वे अक्सर पूजे जाते।
शान बुंदेलों की ओरछा के,
दिव्य पुरुष वे कहलाते।

(२)
हुये पराजित जिन वीरों से
राजा पृथ्वीराज चौहान।
बोलो नगर महोबा के थे
कौन बहादुर वीर जवान।

(३)
''चार बांस चौबीस गज
अंगुल अष्ट प्रमान।''
किसने अपने काव्य में
ऐसा किया बखान।

(४)
छुआ छूत जैसी बुराई से
जो जीवन पर्यंत लड़ा।
महापुरुष वह कौन था बोलो
जिसने भारत का संविधान गढ़ा।

(५)
जूही और सुंदर थी शामिल
किसकी सेना में भाई।
कुछ दिमाग पर जोर लगाओ
बात तुम्हें क्या याद आई?

(६)
''तुम मुझको गर दोगे खून
मैं तुमको आजादी दूंगा।''
किसने ऐसे शब्द कहे थे
यदि बता दो मैं खुश हूंगा।

• छिंदवाड़ा (म.प्र.)

(उत्तर इसी अंक में।)

भूत

लघु कहानी : ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

कमल पढ़ाई कर रहा था। पास में चाय का खाली प्याला रखा हुआ था, तभी न जाने कहाँ से एक अजनबी चीज आयी। आते ही चाय के प्याले के बहुत पास से गुजर गई।

कमल ने चाय के प्याले की ओर देखा। फिर चिल्ला पड़ा, ''माँ बचाओ ! भूत !!''

माँ काम कर रही थी। उन्हें आने में देर लगी। वह भूत फड़फड़ाया। कमल डर कर टेबल के नीचे घुस गया।

तभी भूत उड़ा, माँ आ गई। कमल ने आँखें बन्द कर ली थी। माँ ने बांहे पकड़ कर उसे उठाया, ''कहाँ है भूत!'' उन्होंने कमल से पूछा।

वह भूत उड़ कर इधर–उधर गया। दोबारा चाय के प्याले के पास आ कर उस से चिपक गया।

कमल ने चाय के प्याले की ओर इशारा किया, ''वह देखो माँ! भूत।'' कमल जोर से चिल्लाया।

एक बार तो माँ भी डर गई, ''अरे कहाँ है?'' चिल्ला कर कहते हुए माँ ने चाय के प्याले से बाहर निकले कालेकाले पंख देख कर कहा, ''क्या ये भूत है?''

''अरे! यह भूत नहीं है बेटा, ''कमल की माँ बोली।

तब कमल ने पूछा, ''तब माँ यह क्या है! इस अजीब जीव को मैंने पहली बार देखा है।''

''यह तो एक जीव है जिसका नाम है चमगादड़।''

तब माँ ने कमरे की बत्ती बंद कर दी। चमगादड़ उड़ कर अंधेरे में चली गई।

''माँ! बत्ती बंद मत करो। यह बाहर कैसे जाएगा?'' कमल बोला।

तब माँ ने बताया'' चमगादड़ रात के अंधेरे में उड़ने वाला स्तनधारी पक्षी है। इसे रात में दिखाई देता है जबकि उजाले में इसे दिखाई देना बंद हो जाता है। इसलिए यह दिन में पेड़ पर लटक कर दिन भर सोता है और रात को अपना खाना खाने बाहर निकलता है।''

यह सुनकर कमल खुश हो गया। फिर बोला, ''माँ! मैं तो बेकार में ही डर रहा था। यह तो पक्षी था। मैं ने उसे भूत समझा था।''

तब माँ बोली, ''हम अनजान चीजों को भूत मानकर डर जाते हैं। जबकि भूत हमारे मन का भ्रम होता है।'' यह कहकर माँ चली गई और कमल पढ़ने बैठ गया।

● रतनगढ़ (म.प्र.)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (१४)

कथासत्र–१३

श्रीमत् शंकरदेव

(जन्म १४४९ महाप्रयाण १५६८)

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

फिर आया रविवार। पुनः आरंभ हुआ कथा सत्र। शंकर, मनोरमा और माधव बैठ गए। दादाजी भी पहुँच गए। तीनों ने दादाजी के चरण स्पर्श कर सम्मान किया। दादाजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा– उसके पश्चात शंकरदेव कुछ दिन धर्म प्रचार और साहित्य सृजन के कामों में तल्लीन रहे। इसके बाद तीर्थ पर्यटन की योजना बनाई। उस समय कामरूप से भारत के विभिन्न तीर्थों में जाना सरल बात नहीं थी। अधिकाधिक पैदल से और कहीं कहीं नौका से जाना पड़ता था। शंकरदेव के साथ सत्रह लोग थे, उनमें उनके अध्यापक महेन्द्र कन्दली भी थे। सर्वप्रथम जगन्नाथपुरी में जाकर प्रभु जगन्नाथ का दर्शन किया। वहाँ भी अपनी अलौकिक शक्ति और विद्वता सबका आकर्षण का विषय रहा। उसके पश्चात वाराणसी, प्रयाण, सीताकुण्ड, वाराहकुण्ड, उत्तरवाहिनी और अयोध्या के दर्शन किए। वाराणसी में आप कबीर के घर भी गए थे, परन्तु सन्त कबीर के साथ उनका साक्षात नहीं हुआ। पुष्कर से द्वारका के कृष्ण और रुक्मिणी देवी का मंदिर दर्शन कर वापस आए और हिमालय के प्रसिद्ध वैष्णव क्षेत्र बदरीधाम में उपस्थित हुए।

अच्छा तुम लोग यह बताओ– हमारी राष्ट्रभाषा क्या है?

तीनों एक साथ– हिन्दी है दादाजी।

दादाजी – भारत के लिए एक राष्ट्रभाषा की संकल्पना सबसे पहले किसने की थी?

मनोरमा– शायद महात्मा गांधी की थी?

दादाजी – नहीं, सुनो मैं बताता हूँ। शंकरदेव ने बारह वर्ष भारत के अनेक स्थान भ्रमण कर देखा कि इस देश में बहुत कुछ एक है। परन्तु अनेक भाषा होने के कारण एक दूसरे की भावना व्यक्त करना और समझना कठिन है। उनके मन में बार–बार विचार आने लगा कि यदि हमारे देश में एक ही भाषा होती तो कितना अच्छा होता। मन ही मन इस प्रकार विचार विमर्श करते करते हिमालय पर स्थित परमपावन वैष्णव क्षेत्र बदरीनाथ में उपस्थित होते ही अपने हृदय से एक गीत निकलने लगा। गीत की भाषा कामरूपी नहीं थी, उत्तर भारत की बोलियों का मिश्रण था।

माधव – नानाजी! गीत हमें सुनाइए न!

दादाजी – (एक टुकड़ा कागज निकाल कर) सुनो–

मन मेरि राम चरण ही लागु
तइ देखना अन्तक आगु ।। ध्रु।।
मन आयु क्षणे क्षणे टुटे।
देख प्राण कोन दिन छुटे।।
मन काल अजगरे गिले।
जान तिलेके मरण मिले।।
मन निश्चय पतन काया।
तइ राम भज तेजि माया।।
रे मन इसब विषय धांधा।
केने देखि नेदेखस आँधा।।
मन सुखे पाय कैचे निन्द।
तइ चेतिया चिन्त गोविन्द।।
मन जानिया शंकरे कहे।
देख राम बिने गति नहे।

शंकर – हमको समझ में नहीं आया दादाजी!

दादाजी – यह एक भक्ति गीत है। इस गीत की भाषा कामरूपी नहीं है। इसमें कामरूपी, बांग्ला, मैथिली, ब्रज, अवधी आदि उत्तर भारतीय बोलियों का समावेश है। उनका

उद्देश्य था। हमारे राष्ट्र के लिए एक राष्ट्रभाषा हो। जिसके कारण भारत के लिए एक राष्ट्रभाषा के संकल्पकर्त्ता शंकरदेव थे।

मनोरमा – दादाजी शंकरदेव का हृदय बहुत विशाल था और अपने राष्ट्र के प्रति अपार भक्ति थी।

दादाजी – तुम ठीक कह रही हो मनोरमा! उसके बाद आप तीर्थाटन समाप्त कर पुनः वापस कामरूप आए। अपना जन्मग्राम आलिपुखुरी पहुँचकर अपना काम शुरु किया। गीता और भागवत के मत को लेकर उन्होंने एक विष्णु या कृष्ण को आराध्य के रूप में लेकर आडंबरपूर्ण कर्मकाण्ड वर्जित एक हरिनाम धर्म समाज में प्रचारित करने लगे। उस समय कामरूप में भी जाति–पाँति, छुआ–छूत, स्पृश्य–अस्पृश्य और पशु पक्षियों की बलिप्रदान कर देवी देवताओं की पूजा का प्रचलन था। शंकरदेव ने सबको नकार कर एक हरिनाम धर्म पर बल दिया। तथाकथित नीच जाति होने के कारण धर्म और उपासना से वंचित शोषित उपेक्षित, अशिक्षित, शूद्र और कैवर्त तथा अन्त्यंज गिरिवासी–वनवासियों के लिए भी अपना धर्म का द्वार खोल दिया। इससे कर्मकांडी, बहुदेव–देवियों के पूजकगण उन पर नाराज होकर आहोम राजा से शिकायत करने लगे। उस समय ऊपरी असम में आहोमों का और निचले कामरूप में कोच वंश के राजाओं का शासन था। कर्मकाण्डियों के भड़काने पर आहोम राजा ने शंकरदेव पर उत्पीड़न आरंभ कर दिया। उनका प्रिय शिष्य माधव और दामाद को पकड़कर कारागार में डाल दिया। बाद में दामाद को मार डाला और माधव को उदासीन मानकर छोड़ दिया। विरक्त होकर आप ऊपरी असम छोड़कर निचले कामरूप आने का निर्णय लिया। दादी के आदेश पर उन्होंने दूसरा विवाह भी किया। आप अपने दल बल सहित नाव से कोच राज्य में प्रवेश किया। वहाँ आपको स्वागत हुआ, किन्तु कुछ लोग विरोध भी करने लगे। शंकरदेव के लिए एक सुविधा भी हुई। कि उनके एक संबंधी भाई की कन्या भुवनेश्वरी का विवाह कोच राजा नरनारायण के भाई और राज्य के प्रधान सेनापति तथा दीवान चिलाराय ने किया था। उस समय कोच राजा नरनारायण राजा तो थे परन्तु राज्य की देखभाल चिलाराय ही करते थे। इस कारण उनको छोटा राजा कहते थे। चिलाराय के माध्यम से शंकरदेव का परिचय महाराज नरनरायण से भी हुआ और महाराज उनको आदर सहित अपने राज्य में रहने की अनुमति के साथ जमीन जायदाद देकर अपना काम करने हेतु प्रोत्साहित करने लगे। महाराज नरनारायण शंकरदेव की विद्वता और धर्मभाव से अत्यंत प्रभावित हुए। शंकरदेव एक दिन वृन्दावन के बारे में कह रहे थे तो राजा ने कहा कि क्या आप वृन्दावन का चित्र अंकित कर हमें दिखा सकते हैं? तब शंकरदेव ने कहा– जी हाँ, आज्ञा हो तो हस्तताँत (हाथकरघे) में कपड़े में अंकित कर सकता हूँ।'' महाराज ने सब कुछ प्रबंध कर दिया और कुछ दिनों में शंकरदेव और माधवदेव ताँति कुछि के बुनकरों की मदद से वृन्दावनी वस्त्र बुनकर तैयार किया।

मनोरमा – दादाजी! आपने कहा था कि शंकरदेव कायस्थ थे याने उच्च जाति के हिन्दू थे, फिर वे कपड़े बुनते थे यह कैसी बात है? हमारे यहाँ तो मुसलमान लोग ही कपड़े बुनते हैं।

दादाजी – हाँ, तुमने अच्छा मुद्दा उठाया है। सुनो पूर्वोत्तर भारत के सभी वर्गों के लोग, ब्राह्मणों से लेकर सभी जातियों के लोग अपने–अपने घर में कपड़े बुन लेते हैं। यह उस क्षेत्र की परम्परा है।

माधव – तब तो नानाजी! शंकरदेव अच्छे बुनकर भी थे न?

दादाजी – हाँ। शंकरदेव सिर्फ बुनकर ही नहीं अनेक गुणों और विद्याओं के अधिकारी थे। इस प्रकार उन्होंने धर्म प्रचार, साहित्य सृजन, सत्र–नामघर आदि की स्थापना में तत्पर होने लगे। कर्मकाण्डी ब्राह्मणगण उनके विरुद्ध प्रजाओं को बहकाते रहते हैं कि इससे राज्य का अमंगल होगा, इसलिए उनको पकड़कर दण्ड देना उचित है। ब्राह्मणों की कथा सुनकर महाराज आग बबूला हो गए और शंकर देव को तुरंत मार डालने का आदेश दिया। महाराज का आदेश सुनते ही छोटे राजा चिलाराय ने गुप्त रूप से शंकरदेव को ला कर अपनी विशाल हवेली में छुपा कर रख दिया। उस समय चिलाराय के हवेली अत्यंत सुरक्षित थी। महाराज नरनारायण की सेना शंकरदेव को खोज नहीं पाया, जिससे नाराज होकर उनके शिष्यों को ही सजा देने लगे। सत्य

हमेशा सत्य ही होता है। कुछ दिन पश्चात् कर्मकाण्डी ब्राह्मणों के झूठे आरोप की पोल खुल गई। महाराज को बड़ा पश्चाताप हुआ। उन्होंने शंकरदेव को खोजने का आदेश दिया और जब पता चला कि शंकर देव उनके प्यारे भाई की हवेली में है तो संतोष की सांस ली और भाई से अनुरोध किया और अभय देकर कहा कि शंकर देव को राजदरबार में उपस्थित करा दें। अत्यंत सावधानी के साथ छोटे राजा चिलाराय ने शंकरदेव को राजदरबार में उपस्थित करवाया। शंकरदेव को देखकर महाराज अत्यंत ने प्रसन्न होकर सम्मानित किया और कर्मकाण्डी ब्राह्मणों का आरोप निराधार प्रमाणित होने के बाद उनको दंडित किया अब शंकरदेव महाराज नरनारायण के राज्य में प्रमुख महान और श्रीमंत व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। उस समय से शंकरदेव को श्रीमंत शंकरदेव कहने लगे। उस समय कोच राज्य की राजधानी थी कोच बिहार। जो वर्तमान उत्तर बंगाल का एक प्रमुख शहर है। उस समय वह स्थान कमता कामरूप के अन्तर्गत था। श्रीमंत शंकरदेव महाराज नरनारायण के अत्यंत प्रिय बन गए, छोटे राजा चिलाराय उनसे शरण ग्रहण कर शिष्य बन चुके थे। नरनारायण ने अपनी राजधानी के पास मधुपुर नामक स्थान पर जमीन जायदाद, दास–दासी आदि प्रदान कर उनको बसाया। हर रोज उनसे शास्त्रों का वचन सुनकर धन्य होने लगे। उस समय महाराज नरनारायण की राजधानी महान विद्वान साहित्यकारों का केन्द्र बन चुका था। उन्होंने गुणी–ज्ञानी, विद्वानों, कवि–साहित्यकारों को पृष्ठपोषकता प्रदान कर उत्साहित किया था। जिसके कारण उस समय कामरूपी भाषा में प्रचुर साहित्य का सृजन हुआ था। जो वर्तमान असमीया साहित्य का अनमोल रत्न के रूप में परिचित है। आज बहुत देर हो गई, अगले रविवार को फिर सुनाऊँगा।

आज के लिए राम, राम...

तीनो – राम राम....

● ब्रह्मसत्र तैतलिया (असम)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *महावीर हनुमान श्रीराम और लक्ष्मण से सबसे पहले किस वेश में मिले थे?*
- *गंगा के चले जाने के बाद हस्तिनापुर सम्राट शान्तनु ने किन से विवाह किया?*
- *किस देश को प्राचीन काल में चम्पा कहा जाता था?*
- *प्रसिद्ध सिंहगढ़ दुर्ग भारत के किस महानगर के समीप है?*
- *पतित-पावनी गंगा जहाँ से निकलती है वह स्थान किस नाम से जाना जाता है?*
- *मुस्लिम हमलावरों के काल में दक्षिण भारत में ढाई सौ सालों तक किस साम्राज्य का शासन रहा?*
- *तपोगर्भ लौह नाम की धातु प्रचीन काल के वायुयानों में किस काम के लिए प्रयोग होता था?*
- *१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता समर में असाधारण वीरता दिखाने वाले जगदीशपुर के राजा कौन थे?*
- *बाड़मेर क्षेत्र को पहले किस नाम से जाना जाता था?*
- *११ अप्रैल के दिन किस महापुरुष की जयंती आती है?*

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

अनोखा चोर

कहानी : संजीव कुमार आलोक

बात काफी पुरानी है। एक गांव में विद्या नामक एक ज्ञानी पंडित रहता था। वह एक अच्छा कवि भी था, लेकिन वह था बहुत ही गरीब। एक बार जब कई दिनों तक लगातार कवि विद्या के घर चूल्हा न जल सका, तो भूख से वह व्याकुल होकर मन ही मन चोरी करने की सोची पर तभी उसके दिमाग में यह बात भी आयी कि आखिर चोरी किसके यहां की जाएं? अगर निर्धन के घर चोरी होगी तो बेचार और भी वह दुखी होगा, व्यापारी के यहां चोरी होगी तो वह अपना घाटा पूरा करने के लिए सामानों के मूल्य और भी बढ़ा देगा। जिससे सभी आदमी को परेशानी होगी। ...तो फिर चोरी किसके यहां की जाए?

बहुत सोचने के बाद विद्या ने राजा के यहां चोरी करने का फैसला किया। विद्या ने सोचा यदि राजा के राजकोष से थोड़ा सा धन निकाल लिया जाए तो पता नहीं चलेगा। राजकोष को विशाल समुद्र के समान है जिससे एक दो चुल्लू पानी घटने से उसका क्या बिगड़ेगा? रात को विद्या राजमहल के द्वार पर पहुंच गया।

उसकी पंडित जैसा पहनावा देखकर द्वारपाल ने अंदर जाने दिया। कवि विद्या सीधा राजा के शयनकक्ष में जा पहुंचा। राजा गहरी नींद में से रहा था। उसके सिराहने राजमुकुट और बहुमूल्य आभूषण रखे हुए थे। उन्हें देखकर विद्या ने राहत की सांस ली– ''चलो, जीवन भर आराम से रहने का रास्ता खुल गया।''

लेकिन सभी उसके दिमाग में यह विचार आया कि इन आभूषणों को चुराऊं कैसे? हीरे मोती और सोने चाँदी की चोरी को शास्त्रों में घोर पाप माना गया है।

यह विचार आते ही वह वहां से बाहर निकल गया। एक दूसरे कमरे में अनाज का ढेर नजर आया। लेकिन ज्ञानी विद्या अन्न भी छू न सका, क्योंकि शास्त्रानुसार अन्न की चोरी भी पापाचार में शामिल है। इस तरह कई चीजें चुराने की इच्छा हुई लेकिन शास्त्र के विरूद्ध होने के कारण कोई भी सामान चोरी नहीं कर सका। अंत में वह निराश होकर घर लौटने लगा।

लौटते समय द्वार पर पहुंचते ही सेनापति ने उसका रास्ता रोक लिया। उसने उसे कड़कती आवाज में पूछा– ''इतनी रात गये तुम राजमहल में क्या कर रहे थे?''

विद्या ने सेनापति को सच बता दिया कि वह राजमहल में चोरी करने आया था। लेकिन वह बिना चोरी किये वापस जा रहा है।

विद्या की बात सुनकर सेनापति बुरी तरह चौंक पड़ा– ''क्या तुम यहाँ चोरी करने आये थे?'' और सेनापति ने विद्या को गिरफ्तार कर लिया।

अगले दिन राजदरबार में विद्या को राजा के सामने पेश किया गया। राजा स्वभाव से अत्यंत दयालु था। उसने शांत स्वर में पूछा– ''वेशभूषा से तो आप पंडित लगते हैं, फिर आपने चोरी करने की बात कैसे सोची?''

विद्या बोले– ''महाराज!

भूख एक ऐसी आग है, जो बुद्धि को जलाकर राख कर देती है। लेकिन सौभाग्यवश मेरी विद्वता और विवेक ने मुझे पतित होने से बचा लिया। मैं आपके भंडार से मुट्ठी भर धूल भी न चुरा सका... यही कारण है कि मैंने सेनापति जी से सच्ची बात बता दी। अब आप जो भी दण्ड देंगे वह मुझे सहर्ष स्वीकार होगा।''

राजा ने विद्या की बात सुनकर सोच में पड़ गए और काफी सोचने के बाद बोले आपको तो चोरी की सजा अवश्य मिलेगी। लेकिन मेरे लिय यह दुर्भाग्य की बात है कि आप जैसे ज्ञानी, गुणी पंडित को इस राज्य में निर्धनता की मार खाकर चोरी जैसा जघन्य अपराध करने पर उतर आना पड़ा। आपकी सजा यह है कि आप अब राजदरबार में सभा पंडित के तौर पर कार्य करेंगे। आपको सभा पंडित नियुक्त किया जाता है। वहीं मैं आप जैसे शास्त्रज्ञ पंडित से क्षमा मांगता हूँ और सेनापति के कठोर आचरण के लिए मैं लज्जित हूं।

• बाढ़ (बिहार)

म.प्र. का नं.-1 संस्थान

AN ISO 9001:2015 Certified Academy

फोर्स DEFENCE ACADEMY

समर्पित टीम
सर्वश्रेष्ठ परिणाम ....

11th & 12th + NDA, CDS, AFCAT
Army, Navy, Airforce

TUSHAR VERMA
RECOMMENDED- NDA 2018
All India 17th Rank TES

JAYESH PATEL
RECOMMENDED NDA 2018

GIRRAJ SHARMA
CDS- 2018

SANJAY AHIRWAR
INDIAN NAVY 2017

DHARMENDRA PARMAR
AIR-FORCE 2017

Priyanshu Tiwari
Navy 2018

Govind Rajpoot
Navy 2018

Arun Malviya
Navy 2018

Rahul Prajapati
Navy 2018

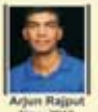
Arjun Rajput
Navy 2018

डिफेंस फोर्सेस की तैयारी हेतु सर्वश्रेष्ठ संस्थान कर्नल मनोज बर्मन सर के मार्गदर्शन में SSB Interview की तैयारी करें एवं सेना में अधिकारी बनें ...

Physical, Written & SSB

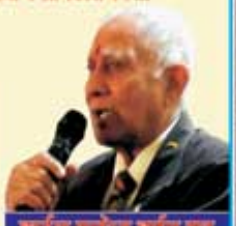
कर्नल मनोज बर्मन सर

संस्थान का स्वयं का हॉस्टल

पेट्रोल पम्प के सामने, सेन्ट्रल बैंक के उपर,
साजन नगर, नवलखा, इन्दौर
Call : 98260-49151, 9691837948

Email : forcedefenceacademy@gmail. com
www.forceacademyindore.com

हिन्दी के दीपक जले

कविता : रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक'

अम्ब शारदे! दो हमें, कुछ ऐसा आशीष।
हर प्रकार ऊँचा रखें, हम हिन्दी का शीश।।

हिन्दी में हों हर जगह, हर प्रकार के कार्य।
लिखने पढ़ने बोलने में हिन्दी अनिवार्य।।

हिन्दी गंगा की तरह, पावन परम ललाम।
खरी कसौटी पर कसी, इसकी लिपि अभिराम।।

जो बोलें लिखते वहीं, हिन्दी का यह रूप।
मिली श्रेष्ठ लिपि है इसे, है उत्कृष्ट स्वरूप।।

हिन्दी है यशदायिनी, और प्रगति आधार।
हिन्दी से मिलता सदा, अनुपम प्यार दुलार।।

भाषाएँ सब देश की, करती हैं मनुहार।
हिन्दी अपने हिन्द की, बने कंठ का हार।।

हिन्दी का दीपक जले, हर आँगन हर द्वार।
सकल विश्व में हो पुनः संस्कृति-ज्योति प्रसार।।

• लखनऊ (उ.प्र.)

(भवालकर कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत बाल कहानी)

स्वच्छता एक सोच

बाल प्रस्तुति : वत्सला चौबे

नंदनकानन जंगल के राजा शेर सिंह ने जंगल को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने के लिए स्वच्छ नंदन कानन अभियान चलाया था। वे चाहते थे कि उनका जंगल गंदगी विहीन हो जाए तथा सभी जानवर स्वच्छ रहे एवं स्वस्थ बनें। इसके लिए उन्होंने नंदनकानन के अलग-अलग इलाके निर्धारित कर उनके सफाई प्रतिनिधि बना दिए थे। ऐसे ही एक इलाके के प्रभारी हाथी दादा अपने इलाके के भालू और लोमड़ी से बड़े परेशान थे। इन्होंने इधर-उधर कचरा डालने तथा खुले में शौच जाने की आदत बना रखी थी, जिसके कारण जंगल में बीमारियाँ फैल रही थीं। हाथी दादा के कई बार समझाने के बाद भी जब वे न माने तो हाथी दादा उनकी शिकायत लेकर शेर सिंह के पास पहुंचे। हाथी दादा ने शेर सिंह से कहा।

''महाराज की जय हो, आपके आदेशानुसार हमने सारे इलाके को गंदगी मुक्त करने का अभियान चला रखा है परन्तु हमारे यहाँ के दो परिवार भालू और लोमड़ी किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं कर रहे। उन्हें कठोर दंड मिलना चाहिए।'' शेर सिंह ने हाथी दादा को समझाया।

''नहीं हाथी दादा! वे भी हमारे प्रिय है, उन्हें दंड की नहीं स्नेह और समझाइश की आवश्यकता है। उन्हें यह समझाइये कि अस्वच्छ रहने की आदत उनके अपने लिए ही नहीं बल्कि पूरे समाज के विरुद्ध किया गया कार्य है। उन्हे हर संभव मदद कीजिये और उनमें स्वच्छता की आदत विकसित कीजिए।''

दोनों की आदत में सुधार करने की अनेक योजनाएँ बनाते हाथी दादा घर पहुँचे। आँगन में मोटर साइकिल टिकाते ही उन्हें पता चला कि लोमड़ी ताई को परिवार सहित मलेरिया और भालू काका को डेंगू हो गया है और दोनों ही नंदनकानन के नामी चिरायु अस्पताल में भर्ती हैं। हाथी दादा अपने परिवार के साथ उन्हें देखने अस्पताल पहुंचे। उन्होंने जिराफ से पूछा, ''भालू काका और लोमड़ी ताई किस कमरे में हैं?''

जिराफ जी ने बताया, ''उनकी हालत गंभीर है औ

र वे आई सी यू (गहन चिकित्सा कक्ष) में भर्ती है।'' हाथी दादा लिफ्ट से ऊपर दूसरे तल पर स्थित आई सी यू में पहुंचे। आई सी यू के प्रभारी डॉ. गेंडामल से मिकर दोनों का हाल जानना चाहा। डॉ. गेंडामल ने अपनी नाक पर लगा मोटा चश्मा ठीक करते हुए कहा, ''वे दोनों बहुत ही खराब स्थिति में आये थे, प्लेटलेट काउंट काफी कम था, खून चढाना पड़ा लेकिन अब हालत में काफी सुधार है यह सब साफ-सफाई न रखने का नतीजा है। अब इलाज लम्बा चलेगा, आप एक लाख रुपया नीचे काउंटर पर जमा करा दीजिये।''

हाथी दादा ने तुरंत घोड़ा मामा को फोन किया कि किट किट बन्दर के हाथ तुरंत रुपये भेजें और इलाके के समस्त जानवरों को इकट्ठा कर लोमड़ी ताई और भालू काका के घर और आस-पास की सफाई की व्यवस्था करें।

घोड़ा मामा ने तुरंत सभी को स्थिति से अवगत कराया कि इस गंदगी के कारण ही आज हमारी लोमड़ी ताई और भालू काका संकट में है, हमें एक लाख रुपयों का तत्काल इंतजाम कर चिरायु अस्पताल पहुँचना है और साथ ही उनके घर और परिवेश की साफ सफाई की व्यवस्था भी करना है। इतना सुनते ही कोयल मौसी मीठी आवाज में बोली।

''मेरे पास कुछ पैसे हैं, मैं लेकर आती हूँ। आप चिंता मत करें।'' फिर क्या था देखते ही देखते खरगोश, मेंढक, सेही, हिरन, गौरेया सभी ने धन इकट्ठा करना प्रांरभ किया और जल्द ही किटकिट बंदर रुपये लेकर अस्पताल रवाना हो गया।

इधर सभी ने योजना बनाई कि कल प्रातः से ही दोनों के घर और आसपास के लिए सफाई अभियान प्रारंभ किया जाएगा। सुबह होते ही सभी जानवर नियत समय पर लोमड़ी ताई और भालू काका के घर पर पहुँच गये। वहाँ का नजारा तो बहुत ही अजीब और बदबूदार था। लोमड़ी ताई के घर के कूलरों में पानी की गर्मी से अभी तक सफाई ही नहीं हुई थी। कूलरों की टंकियों में ठहरा पानी सड़ रहा था, बगीचे और छत पर टूटे गमलों, जूतों और बर्तनों में पानी इकट्ठा था और उस पर मच्छरों के लार्वा तैर रहे थे। घर और बाहर इधर-उधर कचरे के ढेर लगे थे जिस पर मक्खियाँ भिनभिना रहीं थीं। प्लास्टिक की थैलियों में गीला और सूखा कचरा एक साथ सड़ रहा था। चारों तरफ गंदगी और बदबू का बोलबाला था। ऐसे ही खराब हालात भालू काका के घर के भी थे। बेचारे अकेले रहते थे और आलसी भी थे इसलिए घर में सब कुछ उलट-पुलट था। उन्हें ज्यादातर बाहर का और जंक फूड खाने की आदत थी सो घर में जगह-जगह कोल्ड्रिंक के खाली कैन, पिज्जा के डब्बे और प्लास्टिक बैग बिखरे पड़े थे जबकि नंदनकानन में प्लास्टिक थैलियाँ प्रतिबंधित कर दिए गए थे। अब जंगल के बाकी जानवरों को उनकी अनावश्यक चर्बी का कारण पता चल गया था। भालू काका इतने आलसी थे कि उन्होंने कूलर का पानी साफ करना तो दूर बगीचे में खुले में ही शौच करना प्रारंभ कर दिया था। उनके घर भी ठहरे हुए पानी में मच्छरों की कालोनियाँ आराम से पल रही थी, ऐसे में डेंगू न होता तो क्या होता? सारे जानवरों ने मुँह पर मास्क लगा कर साफ सफाई की। गिलहरियों और बंदरों के दल ने दौड़-दौड़ कर झाड़ू और अपनी पूँछ से कोने-कोने का कचरा साफ किया। जल्द ही सब ने सफाई कर के गीला और सूखा कचरा अलग-अलग इकट्ठा किया और उसे घोड़ा मामा की पीठ पर लाद कर जंगल से बाहर बने गड्ढे में डलवाया। हाथी दादा की योजना गीले कचरे से खाद बनाने और सूखे कचरे से गड्ढे को भर कर उस पर पौधारोपण करने की थी। दोपहर बाद तक सभी ने मिलकर दोनों घरों और उसके आस-पास की अच्छी सफाई कर डाली। सभी जानवर थक कर चूर थे परन्तु उनके मन में नंदन कानन को गंदगी मुक्त करने का संतोष था। आगामी तीन दिनों में सभी के द्वारा इकट्ठे किए गए धन से दोनों के बगीचे में शौचालय का निर्माण कराया गया। अब नन्दन कानन के प्रत्येक घर में शौचालय था।

सात दिनों बाद जब परिवार सहित लोमड़ी ताई और भालू काका लौट कर आये तो अपने घर का बदला हुआ स्वच्छ रूप देखकर उन्हें आश्चर्य और प्रसन्नता तो हुई किन्तु वे अपने पूर्व के व्यवहार के लिए बेहद शर्मिंदा थे। उन्होंने सबसे माफी मांगी और भविष्य में स्वच्छ रहने का संकल्प लिया। अब उन्हें स्वच्छता का महत्व समझ में आ गया था।

● भोपाल (म.प्र.)

छोटा बड़ा

आया गणपति का त्योंहार, धूम मची है द्वारो द्वार
छोटी बड़ी कई मूरत हैं, इन्हें जमाओ तो क्रमवार

बच्चो! गणेश चतुर्थी के पावन पर्व पर गणपति जी की इन मूर्तियों में बताओ जरा कौन सी मूर्ति है किससे बड़ी?

(उत्तर इसी अंक में।)

अहिल्या बाई

जीवनी : स्नेहलता

भारत में ऐसी अनेक नारियाँ हुई है जिन्होंने साधारण घर में जन्म लेकर भी ऐसे महान कार्य किए जिनके कारण उनका नाम आज भी अमर है। अहिल्या बाई भी ऐसी ही महान नारी थी।

अहिल्या बाई का जन्म १७३५ ई. में महाराष्ट्र के पाथरड़ी गाँव में हुआ था। उनके पिता मनकोजी सिंधिया एक साधारण गृहस्थ थे। एक बार इन्दौर के महाराज मल्हारराव होल्कर ने पूना जाते समय इसी गाँव के शिव मंदिर में डेरा डाला। वहाँ उन्होंने इस होनहार कन्या को देखा। कन्या उन्हें बहुत पसंद आई। महाराज मल्हारराव होल्कर ने मनकोजी सिंधिया से उनकी कन्या अहिल्या बाई से अपने पुत्र के विवाह का प्रस्ताव रखा। मनकोजी इस विवाह के लिए तैयार हो गए। मल्हार राव ने कन्या को इन्दौर (प्राचीन नाम इंदूर) लाकर उसका विवाह अपने पुत्र खंडेराव से करा दिया। अब अहिल्या बाई इन्दौर की रानी बन गई।

ससुराल मे आकर अहिल्या बाई ने अपने मधुर स्वभाव तथा सेवा लगन से सबका मन मुग्ध कर लिया। अहिल्या बाई के दो संतानें हुई। पुत्र का नाम मालेराव तथा कन्या का नाम मुक्ता बाई रखा गया। इस प्रकार सुख से जीवन व्यतीत करते हुए नौ वर्ष बीत गए। अहिल्या बाई के जीवन में यही नौ वर्ष सुख के बीते। इसके बाद उनके ऊपर दुःख आते चले गए।

दीघ के पास कुंभेर दुर्ग के युद्ध में खंडेराव युद्ध भूमि में मारे गए। मल्हाररव को अपने बेटे की मृत्यु से बहुत दुःख हुआ। अहिल्या बाई अपने पति के साथ सती होना चाहती थी, परन्तु ससुर मल्हारराव ने उन्हें सती होने से रोका। उन्होंने कहा– ''बेटी ! तू ही तो मेरा सहारा है, तू भी न रहेगी तो मैं इतना बड़ा राजकाज कैसे संभालूंगा?''

अहिल्या बाई ने सोचा कि मृत पति के साथ जल मरने की तुलना में प्रजा की सेवा अधिक पुण्य का काम है, इसलिए वह अपने ससुर की आज्ञानुसार राजकाज देखने लगीं। कुछ दिनों बाद मल्हारराव भी स्वर्गवासी हो गए। अब अहिल्या बाई का पुत्र मालेराव गद्दी पर बैठा। वह बड़ा निर्दयी और दुष्ट था। उसके बुरे व्यवहार के कारण अहिल्या बाई बहुत दुखी रहती थीं।

नौ महीन के बाद अहिल्या बाई का पुत्र भी स्वर्गवासी हो गया। अहिल्या बाई चारों और से दुःखों को भूलकर अपने ससुर के द्वारा सौंपे गए प्रजा की सेवा के कार्य में जुट गई। पेशवा की राय से उन्होंने गंगाधर राव को अपना मंत्री बनाया और राजकाज शुरु किया। गंगाधर राव स्वार्थी व कुटिल था। उसने अहिल्या बाई से कहा कि वे किसी बालक को गोद ले लें और स्वयं भगवत भजन करें। अहिल्या बाई ने कहा कि वे शासन योग्य व्यक्ति को ही सौपेंगी। गंगाधर ने रघुनाथ राव को इन्दौर पर हमला करने के लिए उकसाया। दरबार के लोगों नें कहा कि

वे अहिल्या बाई को ही शासक के रूप में बनाए रखना चाहते हैं। यदि रघुनाथ राव ने हमला किया तो वे सब मिलकर मुकाबला करेंगे। अहिल्या बाई के सेनापति तुकोजीराव होल्कर ने रघुनाथ राव को कहलवाया कि सोच–समझकर नर्मदा नदी के उस पार आना। इससे रघुनाथ राव डर गया और वापस चला गया।

इस तरह एक मुसीबत टली, परन्तु राज्य में दूसरी मुसीबत खड़ी हो गई। डाकू प्रजा को त्रस्त करने लगे। अहिल्या बाई ने घोषणा की कि जो डाकुओं का सफाया करेगा उससे मैं अपनी पुत्री मुक्ताबाई का विवाह कर दूँगी। एक मराठा युवक यशवंत राव फणशे ने कहा कि यदि सेना और धन से मेरी मदद की जाए तो मैं डाकुओं का सफाया कर सकता हूँ। अहिल्या बाई ने उसकी माँग स्वीकार कर ली। यशवंत राव फणशे ने दो साल में यह स्थिति सुधार दी। अहिल्या बाई ने अपने वादे के अनुसार मुक्ताबाई का विवाह यशवंत राव से कर दिया।

अहिल्या बाई ने प्रजा के हित के लिए अनेक कार्य किए। जगह–जगह कुँए, धर्मशालाएँ तथा मंदिर बनवाए। राज्य में निःसंतान लोग बच्चे को गोद ले सकते थे और अपने धन को जिसे चाहें दे सकते थे। उनके समय में व्यापार की बहुत उन्नति हुई। इन्दौर एक बड़ा नगर बन गया। अहिल्या बाई का जीवन बहुत सादा था। वह धार्मिक विचारोंवाली दयालु स्त्री थी। राजकोष का धन अपने ऊपर खर्च नहीं करती थी। आत्मप्रशंसा और चापलूसी से बहुत दूर रहती थीं। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी।

साठ वर्ष की आयु में अहिल्या बाई ने अपने प्राण त्यागे। उनके बाद तुकोजीराव होल्कर गद्दी पर बैठे, उन्होने अहिल्या बाई की मूर्तियाँ बनवाई और उन्हें इन्दौर, नासिक, प्रयाग, गया, अयोध्या और महेश्वर के मंदिर में रखवा दिया। यशवंत राव ने अहिल्या बाई के लिए महेश्वर मंदिर में छतरी बनवाई, जिसे मध्य भारत का ताजमहल कहा जाता है।

● लखनऊ (उ.प्र.)

मैं ही पूरी सेना

कहानी :शशि गोयल

फ्रांस और आस्ट्रिया में युद्ध चल रहा था, लाटूर आर्वन फ्रांस की ग्रेनेडिया सेना का सैनिक था, वह छुट्टी लेकर अपने घर गया था, छुट्टी समाप्त होने पर उसने अपने सामान का थैला बांधा और देशभक्ति के गीत गुनगुनाता वापस अपनी ड्यूटी पर जंगल और पहाड़ों पर बनी पगडण्डी पर होता चल दिया, पहाड़ी मार्ग पर चलते उसे सैनिक शिविर लगने के चिन्ह दिखाई दिये, उन्हें देखकर उसे स्पष्ट हो गया कि आस्ट्रेलिया की कोई सैनिक टुकड़ी उधर से आगे बढ़ी है, उसने अपनी गति तेज कर दी, अब उसने अपना मार्ग घने जंगल और झाड़ियों आदि के बीच से कर लिया, एकाएक उसे सैनिक टुकड़ी के चलने की आवाज सुनाई दी। उसका माथा ठनका, अवश्य यह टुकड़ी पहाड़ी मार्ग से शीघ्रतापूर्वक फ्रांस के छोटे पर्वतयी दुर्ग की ओर बढ़ रही है, उसकी रग–रग फड़कने लगी उसने निश्चय किया कि शत्रु से पहले पहुँचकर दुर्ग रक्षकों को सावधान कर दूंगा, और एक सैनिक फौजी सहायता के लिए संदेश लेकर भेज देगा।

वह छिपता पैरों की आहट भी न हो इस प्रकार दौड़ता, सैनिक टुकड़ी को पार कर दुर्ग की ओर बढ़ गया। दुर्ग में पहुँचकर ही उसने अपनी फूली सांस पर काबू पाया और इधर उधर देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गया, दुर्ग का द्वारा खुला हुआ था, वहाँ एक भी न तो रक्षक था न एक भी सैनिक उन्हें शत्रु के बढ़ते आने का समाचार मालूम हो गया था और घबराकर वे भाग गये थे, इतनी शीघ्रता उन्होंने भागने में की थी कि दो बन्दूकें भी न ले जा सके थे, आर्वन का माथा घूम गया अपने देशवासियों की कायरता पर मन धिक्कार कर उठा, उसने अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया।

सर्वप्रथम उसने दुर्ग का द्वार बन्द किया, फिर भोजन किया और सारी बन्दूकें एकत्रित कीं, सब बन्दूकों को उसने बारूद और गोलियां भरी और स्थान स्थान पर खिड़कियों के पास जमाकर रख दिया, सब बन्दूकों के पास थोड़ा–थोड़ा बारूद और गोलियां रख दी, यह सब तैयारी कर शत्रु की प्रतीक्षा करने लगा।

आस्ट्रेलिया के सैनिक दुर्ग पर एकाएक आक्रमण कर शत्रु को घबराहट में भगदड़ मचवाकर दुर्ग जीतने की आशा से आए थे वे दुर्ग तक अंधकार छा जाने पर पहुँचे, अभी वे दुर्ग के पास आए ही थे कि एक बन्दूक गरजी और उनका एक सैनिक लुढ़क गया, सेना नायक ने टुकड़ी को पीछे हट जाने के आदेश दिये और सुबह होने का इन्तजार करने लगे।

प्रातः होते ही उन्होंने व्यूह बनाकर दुर्ग पर आक्रमण कर दिया लेकिन किले से आती गोलियों ने टुकड़ी के कई सैनिकों को सुला दिया, गोलियां कभी एक ओर से कभी दूसरी ओर से किले की खिड़कियों से आ रही थी किला ऊँचाई पर था सीधे बढ़ना मुश्किल था, दिन भर आस्ट्रिया के सैनिक बढने की कोशिश करते रहे, परन्तु दुर्ग से आती गोलियां उन्हें बढ़ने से रोक रही थी बहुत से सैनिक मौत की नींद सो गये और बहुत से घायल हो गए।

उधर आर्वन इधर से उधर भागते गोली चलाते थक चुका था उसे निराशा सी होने लगी कि वह ऐसे कितनी देर और दुर्ग की रक्षा कर सकेगा, अब तक वह इस आशा पर था कि भागे हुए सैनिक ने फ्रांस की सेना को सावधान कर दिया होगा शायद दुर्ग को बचाने आ जाए

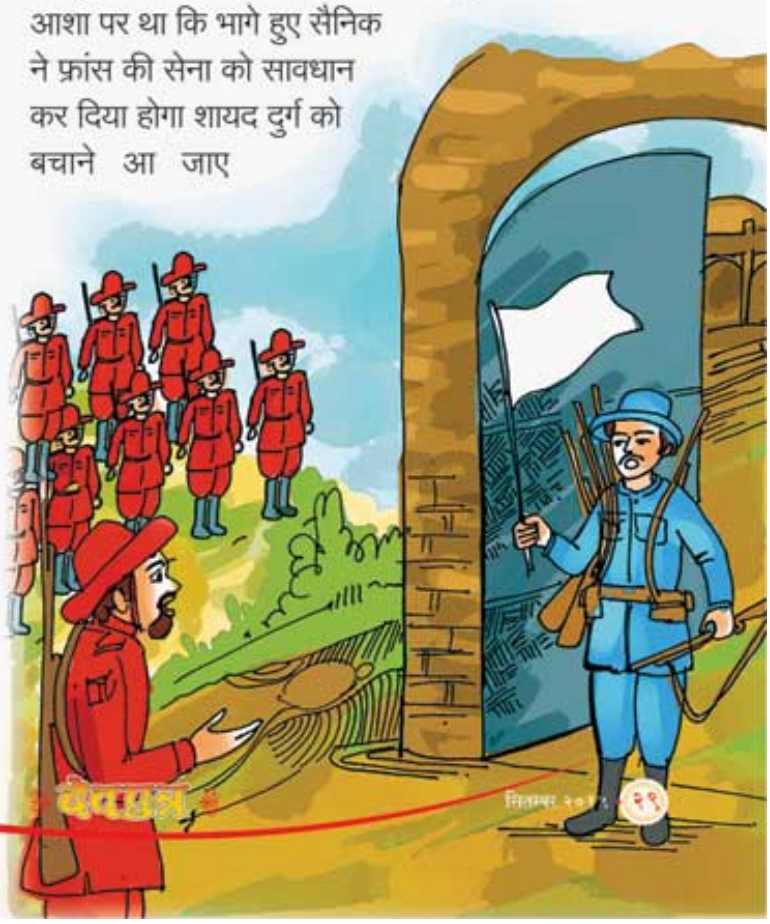

लेकिन शाम होने तक कोई नहीं आया तो वह समझ गया कि फ्रांस वालों ने दस दुर्ग को गया हुआ समझ लिया है इसलिए इधर आने की आवश्यकता ही नहीं समझी हैं उसने संध्या के समय आस्ट्रिया के सेना नायक से पुकारकर कहा, ''यदि दुर्गवासियों को फ्रांस के झंडे तथा हथियारों को लेकर निकल जाने का वचन दो तो मैं दुर्ग नायक सुबह किला सौंप दूंगा।''

सेना नायक ने दुर्ग नायक की मांग स्वीकार कर युद्ध रोक देने का आदेश दिया, प्रातः काल दुर्ग के द्वार के दोनों और आस्ट्रिया के सैनिक कतारबद्ध खड़े हो गए, किले का द्वार खुला और एक हाथ में फ्रांस का झण्डा और दूसरे हाथ से कंधे पर बहुत सी बन्दूकें लिए आर्वन बाहर निकला।

आस्ट्रेलिया के सेना नायक ने जब आर्वन के पीछे अन्य सैनिक नहीं देखे तो पूछा, ''और सैनिक कहाँ हैं? वो पीछे हैं क्या?''

आर्वन हंसकर बोला, ''मैं ही सैनिक हूँ। मैं ही दुर्ग नायक हूँ और मैं ही पूरी सेना हूँ।''

उसकी बात सुन सेना नायक और फौजी टुकड़ी भौचक्की रह गई उनका सिर आर्वन की वीरता देख श्रद्धा से झुक गया, सेना नायक उसकी वीरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने एक प्रशंसा पत्र आर्वन को लिखकर दिया तथा एक मजदूर बन्दूक ले जाने के लिए उसके साथ कर दिया, नेपोलियन महान ने आर्वन को फ्रांस ग्रेनेडियर की उपाधि दी। आर्वन की मृत्यु हो जाने पर भी सैनिक उपस्थिति लेते समय सैनिक अधिकारी सबसे पहले उनका नाम लेकर पुकारता था और एक सैनिक नियमित रूप से उत्तर देता था। वे युद्ध भूमि में अनंत यश की शैया पर सो रहे हैं।

● **सिकन्दरा (उ.प्र.)**

पहुंचाओ तो जानें-

● राजेश गुजर

मूषक राजा को गणेशजी के पास लड्डू लेने जाना हैं, आप ही इसे सही मार्ग से पहुँचाओ।

(३ सितम्बर : जन्माष्टमी)

कृष्ण

कविता : अश्वनी कुमार पाठक

चक्र सुदर्शन धारी कृष्ण।
द्वापर के अवतारी कृष्ण।।
मुर राक्षस को मारा तुमने,
कहते तुम्हें मुरारी कृष्ण।
उठा लिया अँगुली पर पर्वत,
गोवर्धन गिरिधारी कृष्ण।
कारागृह में जन्म देवकी-
थी अद्भुत महतारी कृष्ण।
मामा कंस शत्रु बन बैठा,
किसने, क्यों, मति मारी कृष्ण?
मैत्री दीन सुदामा से की,
दुनिया में है न्यारी कृष्ण।
युद्ध भूमि में गायी गीता,
धन्य! धन्य!! बलिहारी कृष्ण!!
'कर्म करो, तज फल की चिन्ता,
कैसी नीति तुम्हारी कृष्ण!
धरती माँ पर अनाचार का,
बोझ हो रहा भारी कृष्ण।
लेने को अवतार आज फिर,
करो शीघ्र तैयारी कृष्ण।

● सिहोरा (म.प्र.)

जादू नहीं खेल

कहानी : मनोहर चमोली 'मनु'

एक गांव की बात है। गाँव के चौराहे पर भीड़ जमा थी। लोग गोल घेरे में खड़े थे। राधा विद्यालय से घर लौट रही थी। उसने अपने सहपाठी अमित का हाथ कस कर पकड़ लिया। अचानक अमित ने पूछा– ''दीदी। वहाँ चौराहे पर क्या हो रहा है? देखो। वहाँ लोग खड़े हैं।'' राधा ने कहा– ''वहाँ चलकर देखते हैं।''

राधा तेज कदमों के साथ चौराहे की ओर जाने लगी। दोनों लोगों को हटाते हुए तमाशे को करीब से देखने की कोशिश करने लगे।

''यहाँ क्या हो रहा है?'' राधा ने बगल में खड़े एक आदमी से पूछा।

उस आदमी ने धीरे से कहा– ''ये तमाशेवाला आग खाएगा। देखती रह।''

तमाशे वाले के हाथ में डमरू था। उसने उसे जोर से हवा में हिलाया। फिर वह चीखते हुए बोला–'' कोई भी एक कदम न पीछे हटेगा और न ही आगे बढ़ेगा। अब मैं आग खाने जा रहा हूँ।''

तमाशे वाले हथेलियाँ में आग के छोटे–छोटे गोलों को उछाल रहा था। उसका चेहरा अजीब सा दिखाई देने लगा था। तमाशे वाले ने अपनी आँखें बन्द कर ली। फिर वह एक–एक कर आग के गोलों को मुंह में डालने लगा। कहीं से ताली बजी। फिर सभी लोग तालियां बजाने लगे।

कोई बोला– ''वाह! कितना खतरनाक काम है ये। जान जोखिम में डालकर ऐसा कौन करता है। मेरी तरफ से सौ रुपए इनाम।''

अचानक तमाशे वाला एक कटोरा लेकर लोगों के पास जाने लगा। वह कटोरे में कुछ सिक्के उछाल–उछाल कर खनक पैदा कर रहा था।

अमित ने राधा से पूछा– ''दीदी! ये कटोरा लेकर हम लोगों के पास क्यों आ रहा है?''

राधा ने धीरे से जवाब दिया– ''इसने आग का नाश्ता कर लिया है। अब ये हम सबसे रुपए मांगेगा।''

कोई चिल्लाया– ''इसे तो पुरस्कार मिलना चाहिए।''

राधा जोर से बोली– ''हाँ, लेकिन सम्मान के साथ पुरस्कार मिले तो कैसा रहेगा?''

तमाशा दिखाने वाला झेंप गया। वह राधा के सामने जाकर खड़ा हो गया। धीरे से बोला– ''सम्मान के साथ? क्या मतलब है तेरा?''

''मतलब यह कि हमारे यहाँ कोई जगह अक्सर आग लग जाती है। आस–पास के जंगल भी जल जाते हैं। जंगल में रहने वाले बेकसूर जानवर मारे जाते हैं। पक्षियों के अंडे उनके नन्हें बच्चे जल कर स्वाहा हो जाते हैं। अब आप हमेशा के लिए यहीं रुक जाओ। अब जब भी यहाँ आग लगेगी तो आप आग पर काबू पा लेना। आप आग जो खाते हैं।''

अमित ने कहा– ''हाँ, दीदी! कुछ दिन पहले रामू काका की दुकान भी तो जल गई थी। अगर ये तमाशे वाले काका यहाँ होते तो काका की दुकान जलने से बच सकती थी।''

यह सुनकर तमाशे वाला लोगों के चेहरे देखने लगा।

एक महिला बोली– ''ये लड़की ठीक कहती है। पिछले साल तो मेरी गाय

भी जंगल की आग में जल गई थी।''

तमाशे वाला कांपने लगा। वह अपनी पोटली उठाकर जाने लगा।

अमित ने कहा– ''दीदी! ये तमाशे वाले भैया तो जा रहे हैं।''

राधा चिल्लाई– ''अरे! जाने से पहले ये तो बता दो कि आप आग कैसे खा लेते हो?''

तमाशा दिखाने वाला गिड़गिड़ाने लगा। हाथ जोड़ते हुए कहने लगा– ''ये मेरी रोजी रोटी है। वैसे सही बात तो यह है कि आग को खाया नहीं जा सकता। मैं तो यह करतब बहुत अभ्यास के बाद सीख पाया हूँ। इसे करना आसान नहीं है। मैं तो कुछ रुपयों को पाने के लिए इसे चमत्कार कह देता हूँ। अब मैं चलता हूँ।'' तमाशा दिखाने वाला अपना झोला समेटकर जाने लगा।

भीड़ में किसी ने उसका रास्ता रोक लिया।

अमित ने कहा– ''दीदी! ये करतब कैसे होता है?''

राधा ने झट से तमाशेवाले से कहा– ''अब सबको बता तो दो कि यह कैसे किया जाता है।''

तमाशा दिखाने वाला बोला– ''ठीक है बताता हूँ। मेरे दो छोटे बच्चे हैं। मुझ पर दया करना। ये देखिए। मैं आग के लिए हवन में उपयोग करने वाले कपूर के टुकड़े लेता हूँ। कपूर बहुत जल्दी आग पकड़ता है।

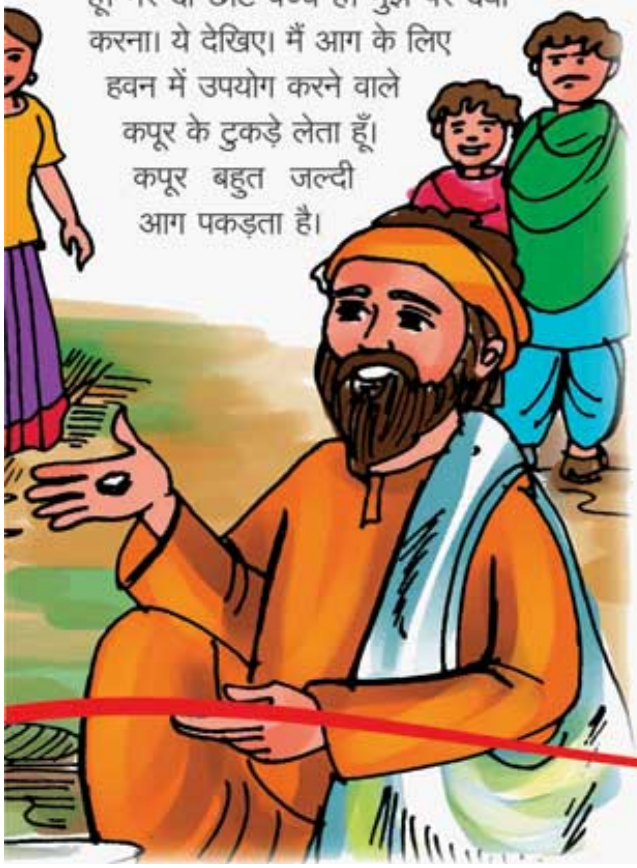

इसकी लपटें भी बड़ी–बड़ी उठती हैं। लेकिन मैं बेहद फुर्ती से कपूर को एक हथेली से दूसरी हथेली में बदलता रहता हूँ। लेकिन जैसे ही कपूर पूरा जलने लगता है और मेरी हथेलियाँ गरम होने लगती है, तो मैं एक–एक कर उन टुकड़ों को मुंह में रख लेता हूँ।''

राधा आगे बढ़कर घेरे के अंदर चली गई। फिर वह जोर से बोली– ''यह विज्ञान का खेल किन कारणों से होता है यह भी तो बताओ।''

तमाशे वाला बोला– ''कपूर एक कार्बनिक पदार्थ है। यह गर्म होने पर द्रव में नहीं बल्कि सीधे गैस अवस्था में बदलता है। कपूर को जलने के लिए आक्सीजन चाहिए। चोकोर आकार के कपूर पर एक तरफ ही आग लगती है। जैसे ही आग दूसरे छोर की ओर फैलती है तो मैं इसे अपनी दूसरी हथेली में रख लेता हूँ। जब आग कपूर के चारों और फैलने लगती है तो मैं उसे मुंह में रख लेता हूँ। मुंह में लार होती है। होंठों को बंद कर देने से कपूर को आक्सीजन नहीं मिलती और कपूर बुझ जाता। मुँह के भीतर की कार्बन डाइआक्साइड भी कपूर को बुझाने में मदद करती है।''

राधा ने पूछा– ''तो इसका मतलब यह हुआ कि मैं भी इस खेल को कर सकती हूँ न?''

एक महिला ने राधा का हाथ पकड़ लिया ''ना बेटी न। तू तो बस अपना नाम बता दे। ऐसे करतब में जोखिम होता है। थोड़ी सी गलती भी भारी पड़ सकती है। गलती तो हमारी है कि हम आए दिन तमाशे वालों के कहने में आ जाते हैं और भीड़ कर देते हैं।''

यह सुनकर तमाशे वाले का मुँह लटक गया। भीड़ छंटने लगी। तमाशे वाला भी चुपचाप जाने लगा।

अमित ने राधा से पूछा– दीदी। ये तमाशे वाला अब क्या करेगा? वो कह रहा था न कि उसके दो छोटे बच्चे हैं।''

राधा ने जवाब दिया– ''पहली बात तो यह है कि जादू या चमत्कार कुछ नहीं होता। यह सब तरकीब हैं, जिनमें विज्ञान को कोई न कोई सिद्धांत छिपा होता है। तमाशे वाला चाहे तो कोई भी काम कर सकता है। पेट भरने के लिए झूठ का सहारा लेना गलत है। तमाशेवाला चाहे तो तमाशा दिखाने से पहले बताए कि यह जादू नहीं है, बल्कि विज्ञान का एक खेल है। लेकिन तब कोई भी इस तमाशे वाले को एक रुपया भी नहीं देगा। चल अब जल्दी से घर चल। देर हो गई है।''

अमित राधा के कदमों के साथ अपने कदम मिलाने लगा। लेकिन उसकी आँखें फिर भी तमाशे वाले को खोज रही थीं।

● **पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)**

हवा

कविता : डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

चुपके से तन छूती,
मन में
भरती नयी हिलोर हवा।

आती जाने कौन गली से,
किस घर से?
धरती से आती या
आती अम्बर से?
पता-ठिकाना छोर नहीं,
चालाक बहुत
चितचोर हवा।

लू बनती है और कभी
आंधी बनती।
हिटलर बनती और कभी
गाँधी बनती।
कभी बैठती शांत
तो कभी
खूब मचाती शोर हवा।

फूलों की खुशबू को
साथ घुमाती है।
पत्तों के संग ठुमके
खूब लगाती है।
बादल को नीचे ले आती
रखती इतना
जोर हवा।

● बरेली (उ.प्र.)

|| २५ सितम्बरः पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती ||

शिक्षा करना पूरी

कविताः डॉ. वेदमित्र शुक्ला 'मयंक'

विद्यार्थी उत्तम बनने का
दीना ने लक्ष्य बनाया,
ढेरों कठिनाई आयी पर
आगे-आगे कदम बढ़ाया।

छात्रवृत्ति से अध्ययन का वह
अपना सारा खर्च उठाते,
अच्छे नेक आचरण वाले
सबके ही मन को हैं भाते।

दीना बारहवीं कक्षा में
सबसे श्रेष्ठ अंक ले आये,
थोड़े ही साधन-सुविधा में
वो सर्वोत्तम छात्र कहाये।

उनको उसी समय विद्यालय ने
शिक्षण का कार्य दिया,
किन्तु उच्च शिक्षा की खातिर
उसने नहीं स्वीकार किया

अति विनम्र हो दीना बोले
बच्चो! ये है बात जरूरी,
आगे बढ़ने को पढ़ने की
शिक्षा अपनी करना पूरी।

• दिल्ली

|| हमारे राज्य वृक्ष ||

लक्षद्वीप का राज्यवृक्ष :

ब्रेडफ्रुट

डॉ. परशुराम शुक्ल

लक्षद्वीप का सुन्दर पौधा,
खारे पानी वाला।
सागर के द्वीपों पर मिलता,
होता बड़ा निराला।
छः मीटर तक सीधा ऊँचा,
अपना रूप दिखाता।
रोचक फल देने के कारण,
जग में जाना जाता।
बच्चों! इसके कच्चे फल से,
आटा लोग बनाते।

इस आटे की बनी रोटियाँ,
बड़े स्वाद से खाते।
धूसर पीली लकड़ी इसकी,
दीपक से बच जाती।
और टिकाऊ फर्नीचर से,
सब घर द्वार सजाती।
औषधीय उपयोगी भी यह,
ऐसी दवा बनाता।
रक्त चाप से त्वचा रोग तक,
पल में दूर भगाता।

• भोपाल (म.प्र.)

सीख श्रम की

कहानी : अनिता जैन

एक अमीर व्यक्ति हर रोज सवेरे घूमने निकलता था। एक दिन उसे रास्ते में एक फटेहाल भिखारी दिखाई दिखा। भिखारी अमीर को देखकर उसके पैरों में पड़ गया और गिड़गिड़ा कर कहने लगा, ''साहब मैंने दो दिन से खाना नहीं खाया है। बहुत भूख लगी हैं। आप मेहरबानी कर कुछ पैसे दे दें तो मैं खाना खा लूंगा।''

उस अमीर व्यक्ति को भिखारी की हालत पर तरस आ गया। उसने अपनी जेब से पचास पैसे का सिक्का निकाला और उसे झाड़ियों की तरफ उछाल कर फेंका। सिक्का झाड़ियों में गिर गया। वह अमीर आगे निकल गया।

भिखारी झाड़ियों में सिक्का तलाशने लगा। आधे घंटे की मेहनत के बाद आखिर उसने सिक्का खोज ही लिया। वह प्रसन्न हो गया। रास्ते में उसे वह अमीर व्यक्ति लौटता हुआ मिल गया। भिखारी को देखकर उसने पूछा– ''क्यों, वह सिक्का मिल गया न?''

''जी हाँ, मैंने उसे खोज लिया।'' भिखारी ने जवाब दिया।

अगले दिन फिर सवेरे वह भिखारी उस अमीर को उसी रास्ते पर मिल गया। उसने फिर अमीर से पैसे मांगे। अमीर ने जेब से एक रुपए का सिक्का निकाला और फेंकते हुए कहा– ''यह लो।''

सिक्का एक गड्ढे में जा गिरा, जिसमें गंदा पानी और कीचड़ ही कीचड़ था। अमीर आगे बढ़ गया और भिखारी सिक्का खोजने में व्यस्त हो गया।

एक घंटे की जी–तोड़ मेहनत के बाद वह सिक्का उस भिखारी को मिल गया।

तीसरे दिन भिखारी ने फिर एक नए बहाने की आड़ में अमीर से पैसे मांगे। अमीर ने फिर जेब से एक रुपए का सिक्का निकाला और उसे पास के नाले में फेंक कर आगे बढ़ गया।

नाला काफी गंदे पानी से भरा हुआ था। एक डेढ़ घंटे की कोशिश के बाद वह भिखारी सिक्का पाने में सफल हो सका। वह अमीर आदमी के वापस लौटने तक वहीं खड़ा रहा। अमीर व्यक्ति सैर कर लौटा तो उसने भिखारी से

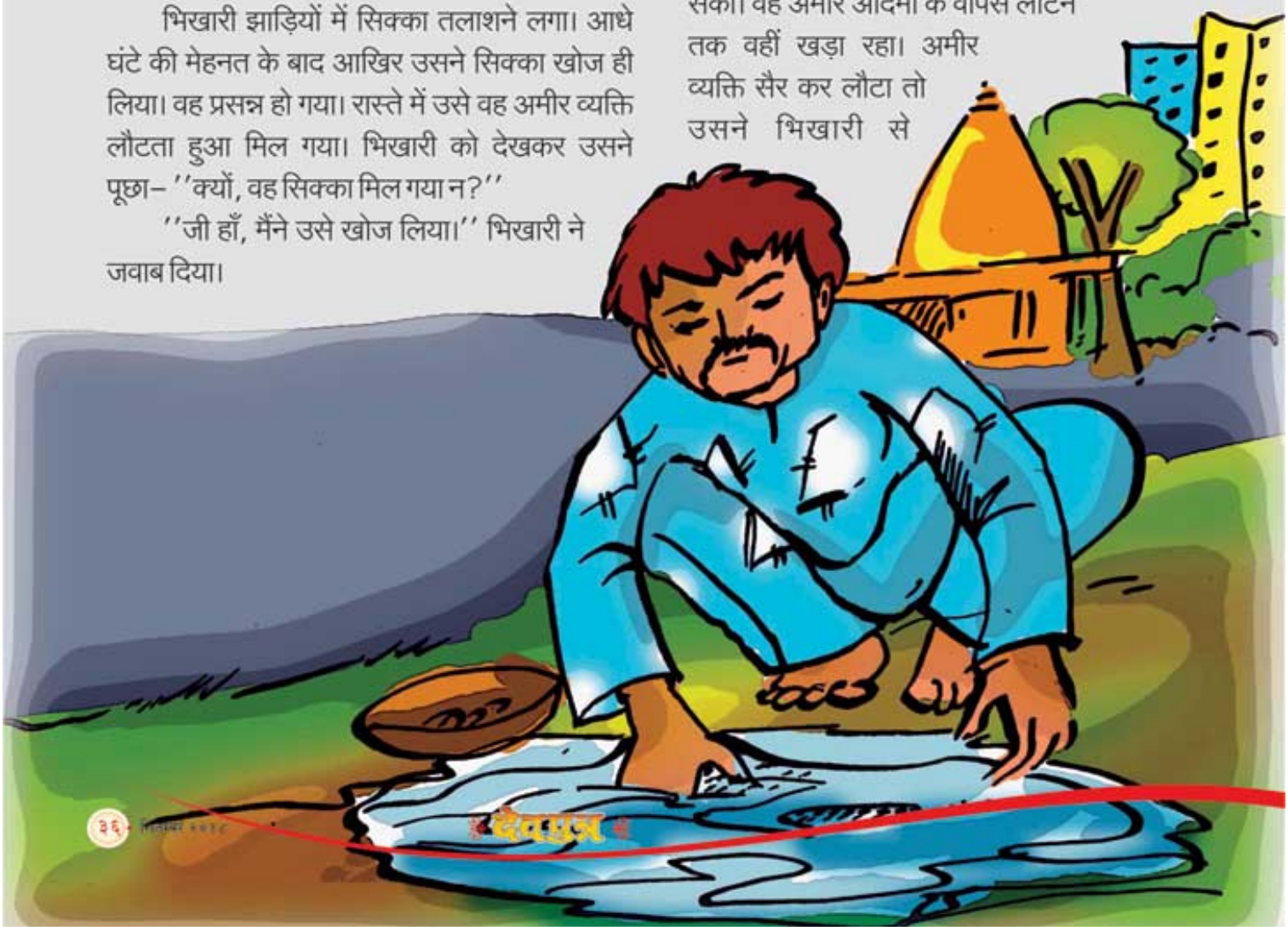

पूछा– ''क्यों सिक्का नहीं मिला क्या?''

''बाबूजी, सिक्का तो मिल गया। लेकिन मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूँ?'' भिखारी ने कहा।

''हाँ, हाँ, पूछो। क्या पूछना चाहते हो?'' अमीर ने मुस्कराते हुए कहा।

''साहब, आप हर रोज मेहरबानी कर मुझे पैसे तो दे देते हैं, लेकिन मैं समझ नहीं पाता हूँ कि आप इस तरह क्यों फेंकते हैं कि मुझे उसे ढूंढने में काफी मेहनत करनी पड़ती है। आखिर ऐसा करने से आपको क्या हासिल होता है।'' भिखारी ने पूछा।

अमीर व्यक्ति ने हँसते हुए जवाब दिया– ''अरे... असल में मैं तुमको मेहनत की सीख देना चाहता हूँ। तुम युवा हो, हट्टे–कट्टे हो। मेहनत कर कमा खा सकते हो। यूं तुम्हें बिना परिश्रम किए मिलता रहा तो तुम काम से जी चुराने लगोगे। कभी मत भूलो कि व्यक्ति मेहनत करने से जीवन में सफल हो पाता है। आलस्य तो वैसे भी इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन होता है। यदि तुम मेहनत से कमाओगे तो एक दिन जरूर ऊंचे उठोगे। मेहनत की कमाई का अपना सुख होता है, इस बात को क्यों भूलते हो, मेरे भाई!''

अगले दिन जब वह अमीर व्यक्ति सवेरे घूमने निकला तो उसे दूर–दूर तक वह भिखारी कहीं दिखाई नहीं दिया।

● भवानी मंडी (राज.)

गोमी गाय

लघुकथा : मीरा जैन

अचानक आये इस आंधी तूफान को देख इंसान तो इंसान जानवर भी स्वयं को सुरक्षित रखने हेतु सुरक्षित स्थान ढूँढने लगे इसी तारतम्य में गायों के झुंड एक मजबूत घने वृक्ष के नीचे शरण ली लेकिन गोमी गाय उस वृक्ष का आश्रय छोड़कर सामने अति कमजोर पेड़ के सहारे टिक कर खड़ी हो गई अन्य गायों ने बहुत समझाया कि वापिस आ जाओ वो पेड़ की भी तुम पर गिर सकता है लेकिन उसने सभी की बातों को अनसुना कर दिया अन्य सारी गायें बेहद परेशान तभी उनमें से सबसे वृद्ध गाय ने कहा– ''तुम लोग नाहक परेशान हो रही हो जब वह खुद ही मरने पर उतारू है तो कोई कुछ नहीं कर सकता इतने अच्छे संस्कार दिये थे सब बेकार। तुम सभी शांति से यही खड़ी रहो। तूफानी हवाएं थमने के बाद ही हम यहाँ से हिलेंगे।'' सभी गायें चुपचाप उस गोमी गाय को सद् बुद्धि देने हेतु भगवान से प्रार्थना करने लगी। कुछ देर पश्चात आँधी बरसात कम हुई तो गोमी गाय को सुरक्षित देख अन्य गायें प्रसन्न हुई। किन्तु किसी ने उससे बात नहीं कि आखिर में गोमी गाय ने ही सभी से माफी माँगते हुए कहा–''आप लोगों की नाराजगी अपनी जगह ठीक है मगर मेरा सोचना है जो हमें आश्रय देता है जिसके कारण हम जीवित हैं उसकी सुरक्षा भी हमारा प्रथम कर्तव्य है मैं उस छोटे से पेड़ का सहारा लेने नहीं बल्कि उसे सहारा देने गई थी आज यदि मैं उसके करीब खड़ी नहीं होती उसे सहारा नहीं दिया होता तो शायद वह अब तक धराशायी हो गया होता। देखो मेरी पीठ सभी की नजरें गोमी गाय की पीठ पर पड़ी पेड़ को संभाले रखने के कारण उसकी पीठ से खून रिस रहा था। समस्त गायों को आत्मग्लानि हो रही थी। सभी ने मिलकर गोमी गाय के इस साहसिक और नेक कार्य के लिए उसकी भूरी–भूरी प्रशंसा करते हुए जय जय कार के नारे लगाए और सभी ने भविष्य में गोमी गाय का अनुकरण करने की कसम खाई।

● उज्जैन (म.प्र.)

चींटी और हाथी

कहानी : मोनिका अग्रवाल

एक जंगल में सोनी चींटी रहती थी। वह रोज सुबह भोजन की तलाश में अपने बिल से निकलती थी। उसके परिवार की सभी चींटियाँ उसके पीछे–पीछे चल पड़ती। उसी जंगल में एक हाथी भी रहता था नाम था मंगल। नाम मंगल पर काम अमंगल।

वह दिनभर इधर–उधर घूमता रहता था। कोई काम नहीं करता था। यहां तक कि वह जंगल में पेड़ पौधों को भी तोड़ता और नुकसान पहुंचाता रहता था। वह अपने से कमजोर पशुओं को अपनी सूंड से उठाकर धरती पर पटक देता था। तो कभी अपनी भारी भरकम पैरों के तले उन्हें कुचल कर मार भी डालता था। जंगल में सभी जानवर उससे बहुत ही परेशान रहते थे। हाथी की एक और बुरी आदत थी कि वह जहां कहीं भी किसी चींटी को देखता, तो उसे अपने पैरों में मसल देता। चींटी को यह सब देखकर बहुत दुःख होता था।

एक दिन सोनी चींटी ने हाथी से बात करने का ठानी। वह मंगल के पास गई और कहा– ''बड़े भाई, तुम दूसरों को इतना क्यों सताते हो? क्या यह अच्छी बात है?''

मंगल हाथी ने चींटी को डांटते हुए बोला– ''तुम चुप रहो। मैं जो चाहे करूं मेरी मर्जी। तुम मुझे समझाने वाली कौन होती हो? चली जाओ, यहां से वरना... अभी तुम्हें मसल दूंगा। ज्यादा दादी अम्मा बनने की जरूरत नहीं... वरना तुझे भी मसल दूंगा...चल भाग यहां से...।''

बेचारी चींटी चुप हो गई और धीरे से घास में छिप

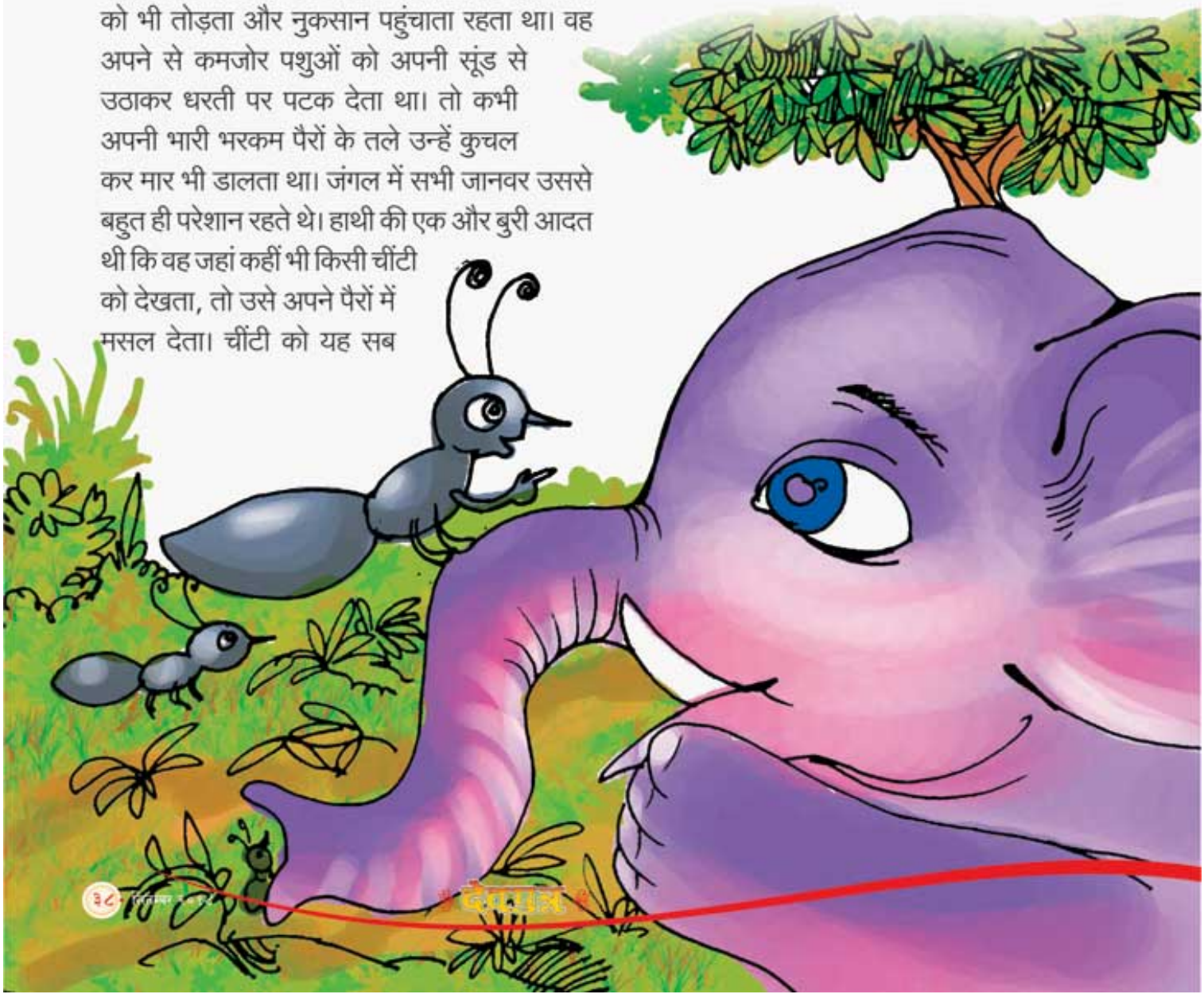

गई। पर मन ही मन, उसने, मंगल हाथी को सबक सिखाने की सोच ली।

एक दिन हाथी रोज के जैसे इधर–उधर मस्ती करता हुआ घूम रहा था और आसपास के छोटे–छोटे पौधों को कुचल रहा था। तभी चींटी ने मौका देखा और वह हाथी की सूंड में घुस गई।

अब चींटी ने हाथी की सूंड में धीरे–धीरे काटना शुरु कर दिया। इस वजह से हाथी परेशान होने लगा। उसने सूंड को इधर उधर मारा। खूब जोर जोर से पटकना शुरु कर दिया। परन्तु उसकी परेशानी कम होने की जगह बढ़ती चली गई।

सोनी, मंगल की इस हालत पर खुश होते हुए बोली–''बड़े भाई, आज पता लगा। दूसरों को सताने में कैसा मजा आता था, तुम्हें। अब क्यों तुम्हें परेशानी हो रही है? तुमने तो कभी किसी की परेशानी नहीं समझी? आज खुद तुम्हारे ऊपर बन आई है, तो तुम परेशान हो रहे हो।''

हाथी ने पहले तो चींटी को बहुत डांटकर, फिर धीरे–धीरे प्यार से अपनी सूंड से बाहर आने को बोला। पर जब सोनी नहीं मानी तो, उसे मनाना शुरु कर दिया। किन्तु सोनी चींटी ने तो हाथी को सबक सिखाना था। उसने मंगल हाथी की सुनी नहीं और धीरे–धीरे उसे अंदर ही अंदर काटती रही।

जब मंगल हाथी बहुत दुखी हो गया, तब सोनी चींटी से बोला– ''मेरी प्यारी बहना! नन्हीं–मुन्नी, सोनी चींटी, आज मैं तुमसे माफी मांगता हूँ। मैं उन सभी जीवों से, जंतुओं से और पेड़ से माफी मांगता हूँ। जिनको मैंने नुकसान पहुंचाया। मैं, वादा करता हूँ कि आज से मैं अब कभी भी किसी को नहीं सताऊंगा।''

चींटी को हाथी पर दया आ गई। वह हाथी की सूंड से बाहर निकल आई और उसने हाथी से कहा– ''दादा! मेरे बड़े भाई, कभी भी किसी को छोटा या कमजोर नहीं समझना चाहिए। हर कोई अपनी–अपनी जगह ताकतवर होता है। किसी की ताकत को कम नहीं समझना चाहिए।''

मंगल हाथी बोला– ''मेरी नन्ही मुन्नी बहना, आज मुझे यह बात समझ में आ गई है। मैं अपने घमण्ड में किसी को कुछ नहीं समझता था। आगे से मैं किसी को तंग नहीं करूंगा और सबसे प्रेमपूर्वक रहूंगा।''

मंगल हाथी फिर सबके साथ मिलकर रहने लगा। किसी को तंग नहीं किया।

• मुरादाबाद (उ.प्र.)

रंग भरो

• चांद मोहम्मद घोसी

शनि और उसके चंद्रमा

प्रस्तुति- संकेत गोस्वामी

किसी रात तुम छत पर जाओ और तुम्हें दो चंद्रमा दिखें तो तुम्हें आश्चर्य होगा.. अब अगर तुम हमारे सौर मंडल के किसी अन्य बड़े ग्रह पर होते तो तुम्हें यह बात अजीब नहीं लगती क्योंकि कई ग्रहों के एक से अधिक चंद्रमा हैं.

हमारे सौर मंडल में सूर्य से छठा ग्रह शनि सबसे अलग और निराला है. उसके 56 चंद्रमा हैं.

अपनी विशेष आकृति और रहस्यों के साथ शनि ग्रह मानव जिज्ञासा का कारण रहा है.

सन् 1610 में वैज्ञानिक गैलीलियो ने सबसे पहले इसके चारों ओर अज्ञात सी चीज देखी. बाद की खोजों से पता चला शनि ग्रह के चारों ओर वलय हैं. जो ग्रह को छू नहीं रहे और अलग-अलग गति से उसकी परिक्रमा कर रहे हैं.

बृहस्पति के बाद शनि हमारे सौर मंडल का दूसरा बड़ा ग्रह है. इसका व्यास 120,536 किलोमीटर है और इसका आकार हमारी पृथ्वी से 95 गुणा बड़ा है.

शनि गैसीय पदार्थों से भरा है. इसमें 94 प्रतिशत हाइड्रोजन और करीब 6 प्रतिशत हीलियम है. और इस पर मीथेन, अमोनिया और पानी की भाप का कोहरा छाया रहता है.

शनि के वलय अनगिनत बर्फ और धूल कणों से बने हैं. जिनमें से कुछ फ्रिज के आकार के हैं तो कुछ बर्फ की 'क्यूब' जितने छोटे.

इन वलयों की परत बेहद पतली है (करीब 100 मीटर) लेकिन है बहुत बड़े फैलाव के साथ. शनि की सतह से 420,000 किलोमीटर दूर तक इन वलयों का बिखराव है. इन वलयों को वैज्ञानिक अध्ययन के अन्तर्गत 'ए' से 'जी' तक नाम दिए गए है. 'डी' 'इ' और 'जी' वलय तेज-हीन है. 'एफ' वलय तेज चमकीला है. और 'ए' 'बी' 'सी' वलय तो इतने चमकीले हैं कि दूरबीन की मदद से पृथ्वी पर से देखे जा सकते हैं.

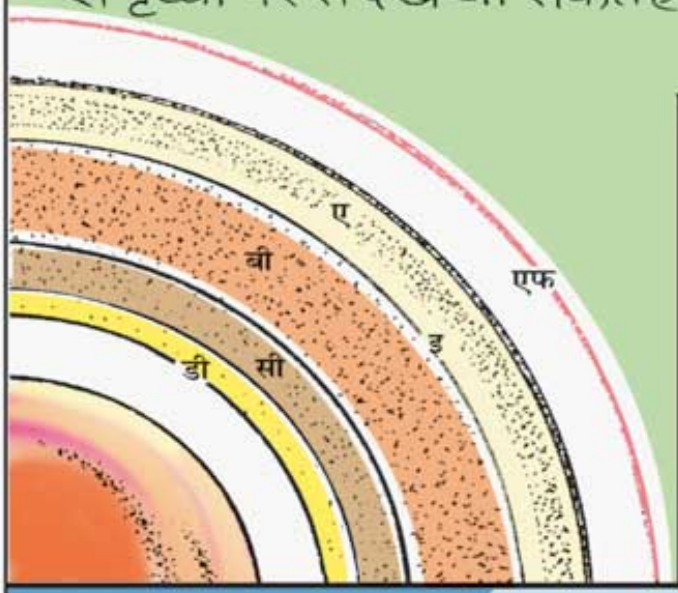

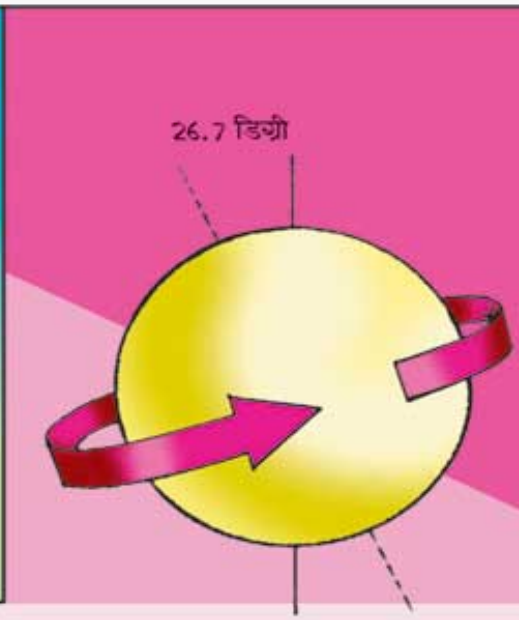

शनि अपने अक्ष पर 26.7° झुकाव के साथ घूर्णन करता है. अपनी धुरी पर एक परिक्रमा यह पृथ्वी के 10 घंटे 40 मिनट में पूरी कर लेता है. यही इसके दिन-रात की पूरी अवधि है. इसका तापमान है -292° सेन्टीग्रेड.

शनि बड़ा जरूर है लेकिन आकार के मुकाबले बेहद हल्का... इसका घनत्व इतना कम है कि अगर यह टेनिस गेंद के आकार का हो तो पानी से भरी एक बाल्टी में रखे जाने पर तैरता रहे, डूबे भी नहीं.

शनि पर हवा के बहाव की गति तो बृहस्पति से भी तेज है. शनि विश्व मध्य रेखा पर 1800 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से हवाएं चलती हैं.

शनि के 56 चंद्रमा है इनमें से कुछ के नाम हैं - तेथस, एन्कलेड्स, डिऑन, मिमास और टाइटन.

टाइटन शनि का एक मात्र ऐसा उपग्रह है जिस पर वायुमंडल मौजूद है.

तेथस -
1050 कि.मी. व्यास
शनि से औसत दूरी -
295,000 कि.मी.

एन्कलेडस -
498 कि.मी. व्यास
शनि से औसत दूरी -
238,000 कि.मी.

मिमास -
397 कि.मी. व्यास
शनि से औसत दूरी -
186,000 कि.मी.

डिऑन -
1118 कि.मी. व्यास
शनि से औसत दूरी
377,000 कि.मी.

कुछ भी कहा जाए पर शनि बड़े आकार के साथ-साथ, बड़ी-बड़ी रोचकताएं भी अपने में समेटे है.

समाप्त.

॥ हिन्दी दिवस : १४ सितम्बर ॥

आओ, हिन्दी दिवस मनाएँ

कविता : डॉ. विजय कुमार शाही

आओ, हिन्दी दिवस मनाएँ।
चतुर्दिक हिन्दी अलख जगाएँ।।
हिन्दी-ध्वनि गूँजे चहुँओर।
बने हिन्दी विश्व भाषा सिरमौर।।
स्व मानस में हिन्दी दीप जलाएँ।
आओ, हिन्दी दिवस मनाएँ।

हिन्दी भारतीय संस्कृति की रक्षिका।
भारत-गौरव की है पोषिका।।
हिन्दी ध्वज विश्व भर फुहराएँ।
आओ, हिन्दी दिवस मनाएँ।।

हिन्दी में मिसरी की मिठास।
इसमें है जन-जन की आस।।
अभिलाषा पूर्ण करके बतलाएँ।
आओ, हिन्दी दिवस मनाएँ।।

हिन्दी है हम सबकी माता।
इससे है सदियों का नाता।।
इस बंधन को अटूट बनाएँ।
आओ, हिन्दी दिवस मनाएँ।।

है हिन्दी, सद्भाव ममता की गंगा।
उठती नित शांति मैत्री की तरंगा।।
हम भारतीय सब में शुभ चेतना जगाएँ।
आओ, हिन्दी दिवस मनाएँ।।

● राउरकेला (उड़ीसा)

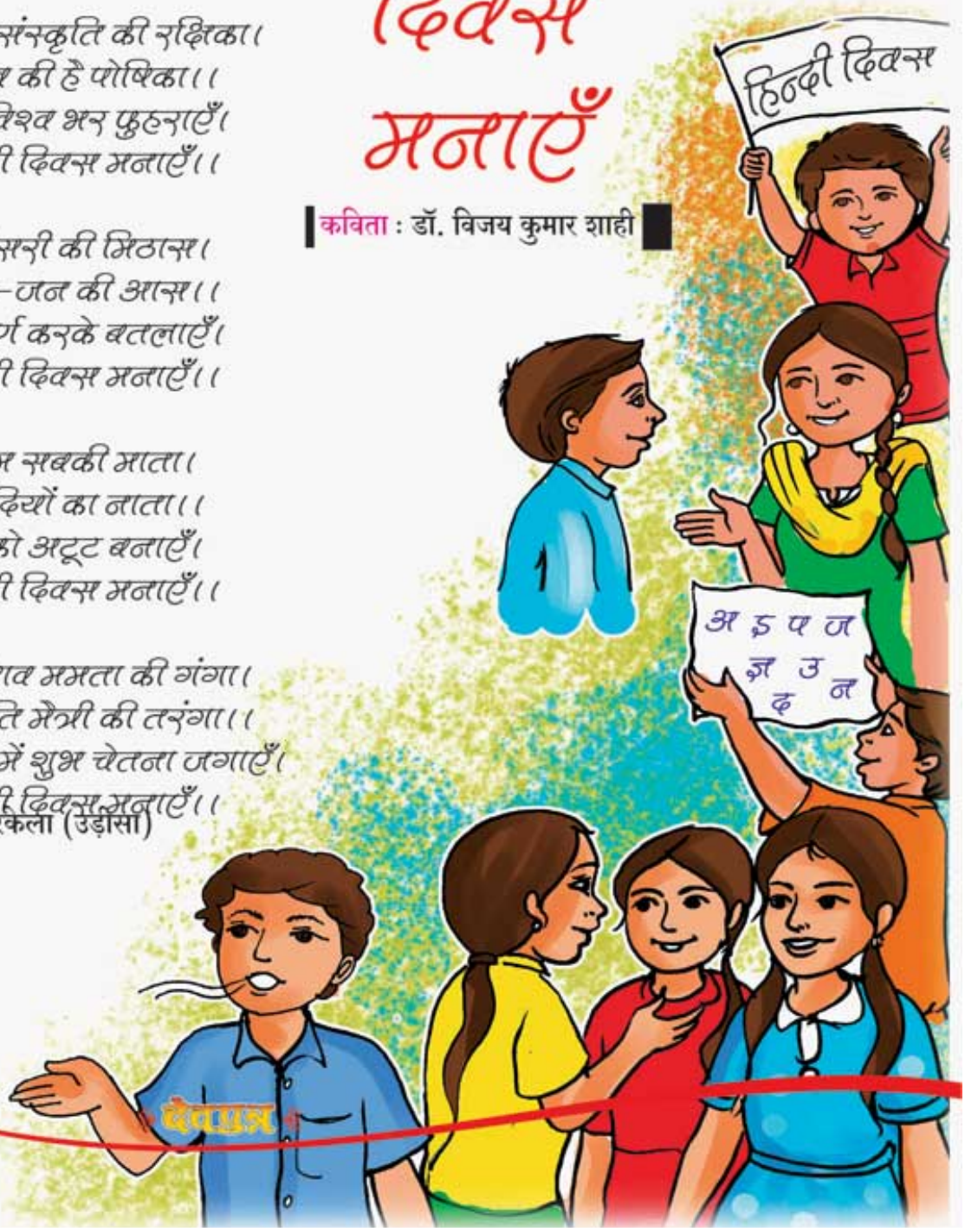

बिन्दु मिलाओ– रंग भरो

● राजेश गुजर

पुस्तक परिचय

नयी निराली बाल कहानियाँ – सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल** की मनोरंजक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक २६ बाल कहानियों का रोचक संकलन।

प्रकाशन – इंडिया डिजिटल पब्लिशर्स रेअर पोरशन, डब्ल्यू ११६ ग्रेटर कैलाश – १, नई दिल्ली ४८

डाकिया डाक लाया – वरिष्ठ बाल साहित्यकार **डॉ. बानो सरताज** की डाक व्यवस्था के क्रमिक विकास की रोचक एवं महत्वपूर्ण जानकारियों पर प्रकाश डालती बहुरंगी चित्रों से सज्जित सूचना साहित्य की महत्वपूर्ण कृति।

प्रकाशन – प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड़, नई दिल्ली ३०

छोटे बच्चे गोलमटोल – ख्यात बाल साहित्य सर्जक **डॉ. गोपाल राजगोपाल** की बालमन में रम जाने वाली ३८ सुरुचिकर, मनभावन, रसभरी बाल कविताएँ।

प्रकाशन – बोधि प्रकाशन, सी–४६, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन, नाला रोड, २२ गोदाम, जयपुर ३०२००६(राज.)

श्वेता और सोनपरी– सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार रचनाकार अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' की नन्ही बच्ची श्वेता और सोनपरी के बीच घटित कल्पित कथाओं का अत्यंत मनोरंजक संसार जिसमें जीवन की अनूठी सीखें है। यह एक रोचक कल्पना संसार है।

प्रकाशन – प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड़, नई दिल्ली ३०

नई सदी के बच्चे – वरिष्ठ बाल साहित्यकार **डॉ. कैलाश सुमन** की ४१ रोचक, मनोरंजक एवं प्रेरक बाल कविताओं का सचित्र संकलन।

प्रकाशन – राजेश्वरी प्रकाशन, भार्गव कॉलोनी, गुना ४७६००१ (म.प्र.)

मेहनत का फल होता मीठा – सुप्रसिद्ध बाल साहित्य लेखिका और संपादिका **श्रीमती कीर्ति श्रीवास्तव** की बच्चों के आसपास के संसार को सूक्ष्मता से देखती, अनुभव करती और मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत करती २६ रोचक बाल कविताएँ।

प्रकाशन – चित्रा प्रकाशन, आकोला जिला चित्तौड़गढ़ ३१२२०५ (राज.)

आपकी पाती

● **नीलम राकेश, लखनऊ (उ.प्र.)** – देवपुत्र अप्रैल अंक मिला। धन्यवाद। अपनी बात पढ़कर आँखें नम हो गई। इतनी गंभीर बात इतने कोमल शब्दो में। बहुत ही सार्थक दिशा देने वाला सम्पादकीय बहुत–बहुत साधुवाद।

कहानी गाँव का एक दिन बहुत बढ़िया लगी। संजीव जी व बादल जी की कहानी भी पसंद आई। कविताएँ सभी रोचक है। गाथा वीर शिवाजी का क्या कहना पूरा अंक ही मुग्ध कर गया। देवपुत्र की पूरी टीम को बधाई!

चुटकुले

बेटा (माँ से)– माँ आज हमारी कक्षा में एक लड़का गिर गया और सभी बच्चे हंसने लगे लेकिन मैं नहीं हंसा।
माँ (प्यार से) बेटा तुम क्यों नहीं हंसे?
बेटा– माँ क्योंकि विद्यालय से गिरने वाला लड़का मैं ही था।

****

माँ – दीवारों पर लकीरें मत खींचो, दीवार देखने में खराब लगती है।
बेटी– माँ पहले तो अपने कभी नहीं रोका, क्यों?
माँ– पहले हम किराए के मकान में रहते थे और यह अपना मकान है। क्यों नहीं समझती?

****

माँ – बेटे! आज का प्रश्न पत्र कैसा था?
बेटा– माँ! सफेद कागज पर काली स्याही से छपा हुआ था।

****

नई–नई शादी हुई पति सुबह–सुबह अपनी सोई हुई पत्नी पर पानी डाल देता है।
पत्नी – नीद से उठती हुई (गुस्से में) पानी क्यों डाला।
पति – तेरे पिता ने बोला था, कि दामाद जी तेरी बेटी फूल की कली है उसे मुरझाने मत देना इसलिए।

सही उत्तर

बड़ा छोटा

३
१०
९
५
६
४
८
२
१
७

पहेलियाँ

(१) हरदौल (२) आल्हा ऊदल (३) चन्दबरदाई
(४) डॉ. भीमराव अम्बेडकर (५) महारानी लक्ष्मीबाई (६) सुभाषचन्द्र बोस

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) ब्राह्मण (२) सत्यवती (३) वियतनाम (४) पुणे (५) गंगोत्री (६) विजय नगर साम्राज्य
(७) विमान को अदृश्य करने के लिए (८) वीर कुँवर सिंह (९) मालानी (१०) महात्मा फुले

आठ अंतर बताओ

(१) चांद की नाक गायब है। (२) मकान में खिड़कियाँ कम है। (३) उल्लू छोटा है।
(४) बगल के लड़के की अंगुली कम है। (५) दूसरे लड़के की आँखों में अंतर है।
(६) उसका दांत भी गायब है। (७) उसकी पेंट भी रंगीन है। (८) दीवार में ईंट नहीं है।

गोलू को सबक

चित्रकथा - देवांशु वत्स

SURYA

Energising Lifestyles

आकर्षक **डिज़ाइन** » विश्व में सबसे अच्छी क्वॉलिटी के **प्रोडक्ट्स** » केवल एक ही नाम **सूर्या**

lighting

fans

appliances

pipes

SURYA ROSHNI LIMITED

E-mail: consumercare@sroshni.com I www.surya.co.in
Tel.: +91-11-47108000, 25810093-96

Toll Free No.: 1800 102 5657

/suryalighting I /surya_roshni

१८ सितम्बरः शंकरशाह रघुनाथदास

।। बलिदान दिवस ।।

फाग

कविता : आचार्य भगवत् दुबे

इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी
राजा थे शंकरशाह
राजा थे शंकर शाह, पुत्र रघुनाथ लड़ाका
गोंड़ राज्य को रहो, सुरक्षित पूर्ण इलाका
अंतिम शासक राज्य के, गोंड़ गठीले वीर
आजादी वे वास्ते, रहे सजग गंभीर
इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी
रहे सजग गम्भीर, भक्त, देवीमाला के
चालक थे तलवार, तीर, बरछी भाला के
पुरवा में रई इक गढ़ी, बचे पचीसक गाँव
शंकर सिंह रघुनाथ की, मिली प्रजा खें छाँव
इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी

मिली प्रजा खें छाँव, राज्य में रओ अनुशासन
न्याय, सत्य, ईमान संग, रओ स्वच्छ प्रशासन
मेरठ, झाँसी में तबई, भड़की थी जो आग
आजादी के वास्ते, देश गओ थो जाग
इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी
देश गओ थो जाग, बढ़त आई चिन्गारी
करबेबे आजाद वतन, खें सब नर नारी
अंग्रेजों से हो रही, जगह-जगह मुठभेड़
राजा शंकरशाह ने, करी न तनकई देर
इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी
करी न तनकई देर, युद्ध की भइ तैयारी
सुकरी में मुठभेड़, आंग्ल टुकड़ी थी हारी
देवी की आराधना, करते शंकरशाह
चुपके-चुपके प्रजा में, भरन लगे उत्साह
इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी
भरन लगे उत्साह, तबई हो गई गद्दारी
बन्दी भये नर नाह, चुगल ने बात बिगाड़ी
आपस को इक भेदिया, जो निकलो गद्दार
गद्दारी कर खें भओ, वो फिर मालगुजार
इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी
वो फिर मालगुजार, गढ़ी की भई तलाशी
आंग्ल विरोधी मिली, एक छोटी कविता सी
चलो मुकदमा, छुप-छुपा, थोप दओ अपराध
पिता पुत्र खें तोप के, मुँह में लाये बाँध
इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी
मुँह में लाये बाँध, तोप से गये उड़ाये
चिथड़े-चिथड़े भये, वतन पे प्राण लुटाये
अमर रहेगा राष्ट्र में वीरों का बलिदान
गर्व शहीदों पर अतः करता हिन्दुस्तान
इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी
करता हिन्दुस्तान, सुयश आचार्य सुनावैं
ऐसइ वीर सपूत, देश की लाज बचावैं
वीर सपूतों खें करें हम, श्रद्धा से याद
करती है रोमांचित इन वीरों की याद
इतै गोंड़ों ने दई है कुर्बानी

● जबलपुर (म.प्र.)

(प्रस्तुत रचना हिन्दी की ही एक बोली जो गढ़ामण्डला, जबलपुर के आसपास बोली जाती है बहोली में है। फाग इस क्षेत्र के लोगगीतों का एक प्रकार है। - सम्पादक

देवपुत्र की ओर से सादर श्रद्धांजलि...

चिरनिद्रा में आज सो गया लोकतंत्र का प्यारा मीत

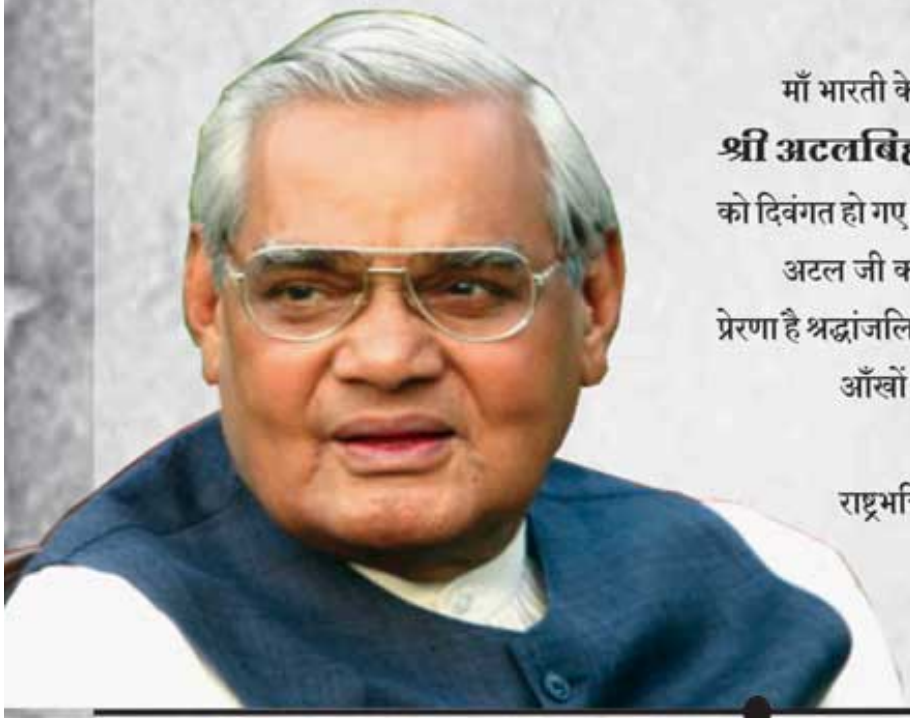

माँ भारती के अमर सपूत, महान कवि, पूर्व प्रधानमंत्री **श्री अटलबिहारी वाजपेयी** १६ अगस्त, २०१८ को दिवंगत हो गए।

अटल जी का लिखा साहित्य बच्चों के लिए भी अमर प्रेरणा है श्रद्धांजलि सहित प्रस्तुत हैं उन्हीं की चार पंक्तियाँ -

आँखों में वैभव के सपने,
पग में तूफानों की गति हो।
राष्ट्रभक्ति का ज्वार न रुकता,
आए जिस जिस की हिम्मत हो।।

मौन हुई हिन्दी की वीणा

श्री गोपालदास नीरज

हिन्दी की वीणा कहलाने वाले मूर्द्धन्य हिन्दी गीतकार श्रद्धेय श्री गोपालदास नीरज १९ जुलाई को हमसे चिरविदा ले गए। प्रस्तुत है बच्चों के लिए लिखा उनका यह गीत -

हम भारत के बच्चे

हम बच्चे हैं तो क्या हम हिन्दुस्तान बदल कर छोड़ेंगे
इंसान है क्या, हम दुनिया का भगवान बदलकर छोड़ेंगे।

मुश्किलें हमारी दासी हैं, आँधी तूफान खिलौने हैं
भूचाल हमारे बिगुल बर्फ से ढके पहाड़ बिछौने हैं
हम नई क्रांति के दूत, पुराने गान बदलकर छोड़ेंगे।

हम देख रहे हैं भूख, उग रही है गलियों-बाजारों में
है कैद आदमी की किस्मत, चाँदी की कुछ दीवारों में
खुद मिट जाएँगी या यह सब, सामान बदल कर छोड़ेंगे।

हम उन्हें चाँद देंगे, जिनके घर नहीं सितारे आते हैं
हम उन्हें हँसी देंगे, जिनके घर फूल नहीं हँस पाते हैं
गर यह न हुआ तो सचमुच, तीर-कमान बदल कर छोड़ेंगे।

सुबक उठे बच्चों के गीत

हिन्दी साहित्य में बाल गीतों के गौरव डॉ. हरीश निगम २८ जुलाई को अचानक चिरनिद्रा में सो गए। २२ जुलाई को ही उनने ३ नए बाल गीत देवपुत्र के लिए भेजे थे। प्रस्तुत है उन्हीं में से एक उन्ही की लिखावट में।

डॉ. हरीश निगम

जाड़े की हवा

ठंडी-ठंडी भली हवा,
बने बर्फ की डली हवा.
चुभती है तीरों जैसी,
वह थी जो मखमली हवा.
जाती कहीं-मफलर लो!
बहती है मुंहजली हवा.
बाहर मत आना भइया
लिये छड़ी [illegible] हवा.
स्वेटर, कंबल, कोट जैसे
नहीं किसी से टली हवा.
गर्मी में सब को भायी
अब सर्दी में खली हवा.

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

www.mitva.in

mitva
Naya Daur - Nayi Raunak

मितवा की बढ़ती रेंज से बढ़ाएं घर की रौनक!

अब मितवा सोलर रेंज के साथ रौशन करें अपना घर, दुकान, अस्पताल व स्कूल।

RAL
(विप्पो के को-प्रोमोटर)
प्रस्तुत करते हैं

मितवा
पोर्टेबल सोलर रेंज
• सोलर लाइट • सोलर लैंटर्न
• सोलर फैन

वितरक या विक्रेता बनके जुड़ें मितवा के सौर ऊर्जा दौर के साथ, अपनी आय को दें नई ऊँचाई, कॉल करें:
1800 1038 222 (सोमवार से शनिवार, 9:30 AM से 6 PM)

RAL
Global brands. Built on trust.

RAL Consumer Products Ltd. B-7/2, Okhla Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110020
Toll Free No.: 1800 1038 222 | Email : info@ral.co.in | www.ralindia.co.in

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक – कृष्णकुमार अष्ठाना